आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/UD/29-150/2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 4 | अंक 08 | उदयपुर बुधवार 01 मई 2019 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

लक्ष्मी के साथ उल्लू का चित्रांकन

डॉ. महेन्द्र भानावत को भेजे गए दीवाली चित्र-कार्ड पर कन्हैयालाल वर्मा द्वारा भेजे उल्लू-लक्ष्मी के योग की स्मरणीय टीप

सांभर लेक के सुविदित चित्रकार कन्हैयालाल वर्मा हर वर्ष दीवाली पर मुझे अपने द्वारा बनाया उद्देश्यपरक चित्र भेजते रहे। एकबार उन्होंने मुझे लक्ष्मी के साथ विविध रंगी उल्लू को रूपायित किये कार्ड भेजे। मैंने उन्हें फोन पर आभार जताते पूछा कि लक्ष्मी के साथ उल्लू की इस संगति का क्या आशय है? इस पर उन्होंने एक टिप्पण-पत्र ही मुझे लिख भेजा जो 02 अक्टूबर 2015 को मिला। यह पत्र जब-जब भी मुझे हाथ लगता है, वर्माजी की कई स्मृतियां मुझे कचोटती हुई कसक दे जाती हैं। उनके चित्रांकन राजस्थानी परम्परा के जीवन्त कथानक लिये होते थे। मेरे संग्रह में सुरक्षित उनका हर चित्र लोकधर्मी परम्परा का शिखर स्तूप है। वे मृदुल स्वभाव लिए अपनी आत्मिक हंसी की स्मित मुस्कान बिखेरने वाले सहज ही किसी को अपने खूंटे से बांध लेते सुधीजन थे। यहां उनका वह पत्र प्रस्तुत है-

अक्टूबर 2014 की बात है। बाल-भवन जयपुर में विद्यार्थी डॉ. मधु पन्त से विचित्र प्रश्न पूछ रहे थे और वे उनका समाधान भी कर रही थीं। प्रश्न कुछ इस प्रकार के थे-

'उल्लू चश्में से दिन में देख सकता है क्या?'

'सांप के पैर होते तो क्या वह चल लेता?'

प्रश्न तो और भी थे किन्तु अब वे मेरी स्मृति में नहीं है। इस अवसर पर बाल-भवन की निदेशक श्रीमती चरणजीत ढिल्लो सहित अन्य विषयों के विशेषज्ञ भी उपस्थित थे। कुछ समय पश्चात पक्षी-चित्रण सीखने के लिए विद्यार्थी मेरे समक्ष उपस्थित हो गए। उल्लू के प्रति उनकी विशेष उत्सुकता को देखते हुए मैंने उन्हें उल्लू बनाना सिखाया और एक पूरी इम्पीरियल शीट पर उल्लू का चित्र बनकर तैयार हो गया। दूसरे दिन मैं सांभर आ गया।

मैंने यहां अपने परिवार में कहा कि बाल-भवन गया था और उल्लू बनाकर आ गया। यही बात मैंने श्रीमती चरणजीतजी से कही और साथ में यह भी कहा कि मुझे इससे सन्तोष नहीं हो रहा है। अत: उल्लू का अध्ययन करने के पश्चात ही उल्लू का चित्र बनाऊंगा।

जब चित्र बन गया तो मैंने उसे बाल-भवन, जयपुर में भिजवा दिया। चित्र को देखते ही श्रीमती चरणजीतजी ने मोबाइल पर कहा- ओ-हो, हमारे पास तो सांभर से बनाबनाया उल्लू आ गया और हम दोनों मोबाइल पर ही जोरदार ठहाका लगाकर हंसने लगे।

पाठक सम्भवतया हमारे द्विअर्थी सहज सम्वाद की मनस्थिति तक पहुंच गए होंगे। इसके पश्चात तो जहां-जहां भी मैंने यह प्रसंग सुनाया, मुझे खूब ठहाके लगाने का अवसर मिलता रहा।

अब तो उल्लू का रूप मेरे मस्तिष्क में गहराई से उतर चुका था। मैं इसको लेकर किसी कलाकृति का सृजन करना चाहता था। थोड़े ही समय में तीन चित्र बनकर तैयार हो गए।

पहले चित्र में महिला सरोवर के किनारे टहल रही है। सूर्योदय का समय है। सरोवर पानी से लबालब भरा हुआ है। उसमें कमल-पत्र, कमल-कली और कमल-पुष्प खिले हुए हैं। सफेद रंग का उल्लू महिला के हाथ पर बैठा हुआ है और वह बड़े स्नेह से उसे निहार रही है। दूसरे चित्र में वही महिला अलग रंग के परिधान पहने हुए काले रंग के उल्लू को अपने बांए हाथ की अंगुलियों पर बैठाकर दुलार रही है। इस चित्र में भी सरोवर का किनारा है लेकिन पहले चित्र से भिन्न है।

तीसरे चित्र में उल्लू आकाश से उड़ता हुआ नीचे धरती पर उतर रहा है और वही महिला अपने दोनों हाथ ऊपर करके उसे अपने पास बुला रही है। इस चित्र में कमल-पुष्प और कमल-कली की स्थिति देखते ही बनती है।

ऐसा लगता है मानो सम्पूर्ण चित्र यहीं से सन्तुलित हो रहा हो। राजस्थानी परिवेश, रूप-रंग और अंगों की छटा चित्रों में चहुंओर प्रस्फुटित हो रही है। तीनों ही चित्रों में उल्लू और महिला की मुस्कान सरस वार्ता का सन्देश दे रही है। मैंने इन चित्रों को शीर्षक दिया है- 'श्री लक्ष्मी'।

लगभग पचास वर्ष पूर्व 'इलस्ट्रेड वीकली' में मैंने अमृता शेरगिल का चित्र 'मदर इण्डिया' देखा था। चित्र में मां बैठी हुई है। बेटा उसकी गोद में है और बेटी पास में बैठी हुई है। सबके परिधान पहाड़ी हैं लेकिन उनकी आंखों में से जीवन की दैन्यता का दर्द टपक रहा है।

यह चित्र उन्होंने स्वतंत्रता से पहले बनाया था और तब के बने भारतमाता के चित्रों से बिल्कुल हटकर एक अनूठा सृजन था। मैं इस चित्र को देखकर तब भी बहुत प्रभावित हुआ था और आज भी प्रभावित हूं।

'श्री लक्ष्मी' के तीनों चित्रों में मैंने परम्परा से प्राप्त देवी स्वरूप का चित्रण नहीं किया है। इसमें तो हमारे घरों में रहने वाली महिला का चित्रण है जिसके लिए मनुस्मृति में लिखा हुआ मिलता है-

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला: क्रिया:।।

काले उल्लू वाली महिला का चित्र मैंने ग्रीटिंग कार्ड के रूप में दीपावली 2014 के अवसर पर डॉ. महेन्द्रजी भानावत के पास उदयपुर भेजा।

डॉ. भानावत साहब ने मुझसे प्रश्न किया कि लक्ष्मी के साथ उल्लू को क्यों बनाया जाता है? मैं निरूत्तर हो गया। मैंने असमर्थता प्रकट करते हुए निवेदन किया कि यह शोध का विषय है, मेरे बस की बात नहीं है। इसका दायित्व आप पर ही छोड़ता हूं।

- कन्हैयालाल वर्मा

बुधसिंह की चुनावी सभा

इस बार आलाकमान ने
बुधसिंह को खड़ा कर दिया।
बुधसिंह सुधबुध खोये
रातीजगा से उठकर
भाग्यजगा में अपने साथियों के साथ
खड़े हो गए तो खड़े ही रहे
बैठने का नाम तक नहीं लिया।
छत्ते से निकलकर
जैसे मधुमक्खियां टूट पड़ती हैं
वैसे ही बधाई देनेवालों का
तांता लग गया।
बुधसिंह खाट पर खड़े होकर
बांक्या वादन की तरह
सबका अभिवादन स्वीकार कर बोले -
'आप लोगों के उत्साहित प्यार ने
मुझे खड़ा कर दिया।
अभी तो मैं खड़ा हूं अपनी खाट पर
मगर याद रखना
नाक जो कट गया तो
सबकी खाट खड़ी कर दूंगा।'
लोग खुश हुए कि सबको
एक-एक खाट मिल जायगी

किस्मत खिल जायगी।
घरवालियां घूंघट के
कणकोले से देखती रहीं
कि यह क्या हो गया।
बड़ी जीजी बोली -
'बाबूजी छतरी ज्यूं तणग्या
अचाणचक नेताजी बणग्या।'
बुधसिंह बोले -
'बांधो गायों के घूघरे,
भैंसों के रमझोल
मंगाओ ऐसा ढोल, रहे न कोई पोल
मतदाता को रिझाओ
जो भी आये
चरखी का ताजा रस पिलाओ।'
सुनते ही चाटू में चमचे ने रस भर दिया
नेताजी ने चुनाव का उद्घाटन कर दिया।
बोले - 'पहली बार चुनाव में खड़ा हूं
लाउड स्पीकर के सामने अड़ा हूं।
एक स्पीकर थे
जो रामजी को प्यारे हो गए
तब से यहां कोई
प्यारेलाल नहीं हुआ
उनका नाम था लाला
मरणोपरांत हमने चढ़ाई
उनको गुलाब की माला
गुलाब जिससे गुलकंद बनता
गुलकंद पेट की कब्ज दूर करता
कब्ज सब रोगों की जड़
जड़ लंबी खरबूजे की
खरबूजा खरबूजे को देख बदले रंग
रंग जर्मन के बड़े पक्के
चढ़े तो उतरे नहीं, छुड़ादे छक्के।
छक्के छुड़ाये थे प्रताप के वीरों ने
हल्दीघाटी वार में
वार वीरों के, तीरों के, तलवारों के
मगर यारों मुद्दे की बात
वार होते हैं सात
सोमवार मंगलवार तीसरा बुधवार
तीसरा सब करते हैं
जब कोई मर जाता है।
मैं मेरी मां की तीसरी संतान
सुनो लगाकर कान
मेरा नाम तीसरा है बुधवार
गजानंदजी का वार
ऐसा न हो कि वोट कोई न दे पाये
बुधसिंह फिर मुंह न दिखाये।'

467वें स्थापना दिवस पर –

हथेली पर उगते चांद सा नवल धवल उदयपुर

-डॉ. तुक्तक भानावत-

उगते सूरज ने जिस धरती के माथे को चूमा, वीरों के लहू ने जिस भूमि को सींचा, प्रताप-सा तेज लिए जिसने आजादी की लौ को रोशन किया, पन्नाधाय की ममता, जिसके आंचल में दूध पीते शिशु ने करवट ली, हवा के ताजे झोंके जैसा शहर, जब जितनी बार देखो, हरबार नएपन के अहसास से भरा हुआ हथेली पर उगते चांद सा जिंदादिल लोगों का शहर उदयपुर।

देवपुर से उदयपुर :

सिसोदिया वंश के बालक उदयसिंह को कुंभलगढ़ के देवपुरा परिवार द्वारा गुप्त पनाह देकर पालने-पोसने के कारण उदयसिंह महाराणा बने।

महाराणा उदयसिंह

तब उस वंश की स्वामीभक्ति को शीर्षमान देते हुए 1559 में हरे-भरे पहाड़ों के बीच जिस शहर की नींव डाली उसका नाम देवपुर रखा किंतु सामन्तों के दबापूर्ण आग्रह को देखते यह अलबेला शहर कई उतार-चढ़ाव देखने के बाद उदयपुर के नाम से अस्तित्व में आया। स्वाभिमान और स्वाधीनता की आजादी के तरानों वाला, हर आनेवाले मेहमानों को 'भला पधार्‌या पामणा' कह आत्मीय आवभगत करने वाला उदयपुर अब स्मार्ट सिटी में शुमार हो गया है।

झीलों के ठंडे पानी और सुकूनदायी हवाओं का स्पर्श पाकर इठलाती बलखाती सर्पाकार, पर्वतमालाओं से घिरे उदयपुर को 'राजस्थान का कश्मीर' और 'पूर्व का वेनिस' भी कहा जाता है। देश की राजधानी दिल्ली यहां से 660 किमी तो मुंबई 800 किमी की दूरी पर है। रेल, सड़क और वायुमार्ग से यह अच्छी कनेक्टिविटी लिए है।

यहां इतिहास और संस्कृति एकसाथ पले-बढ़े और वैभव तक पहुंचे। आयड़ नदी के किनारे 4000 वर्ष ईसा पूर्व पुरा-सभ्यताओं के साक्षी बने अवशेष।

पीछोला रा पाणी उदियापुर रो वास :

पीछोला झील के किनारे ऊंची टेकरी पर बने राजमहल और उससे सटी बस्ती नावघाट पर रहनेवाली लच्छू, रतनप्रभा, जानकी, नारायणी बाइयों के स्वरों को संधान देती लता मंगेशकर का गाया लोकगीत आज भी यहां के कण-कण, जर्रे-जर्रे और लहर-नहर में गूंजित है-

राणाजी म्हैं तो कईयन मांगूं /
सोनो नी मांगूं / रूपो नी मांगूं।
नी मांगूं नवसरहार /
पीछोला रो पाणी मांगूं / उदियापुर रो वास।।

अर्थात् राणाजी! मुझे आपसे किसी की चाहना नहीं है। न सोना, न चांदी, न नवसर हार चाहिए। चाहिए तो पीने के लिए केवल पीछोला का पानी और रहने के लिए उदयपुर में वास-निवास।

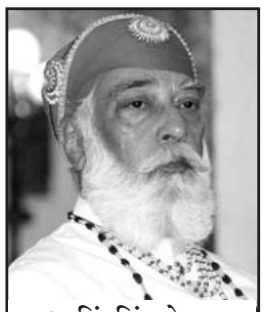

अरविंदसिंह मेवाड़

सच ही है, अतीत को वर्तमान और वर्तमान को अतीत में जीता यह शहर आगे बढ़ रहा है। इसका अंदरूनी भाग अपने में शौर्य और वीरता की अनुगूंज देता, विस्तार पाता 55 वार्डों तक फैल गया है।

किसी समय उदयपुर मेवाड़ की राजधानी रहा। इसके चारों ओर अरावली और विंध्याचल की पहाड़ियों की ठोस सीमाएं हैं। सीमांकन के लिए बनने वाले परकोटे को वाड़ कहते हैं। वाड़ के भीतर यह उसी तरह सुरक्षित बसावट लिए है जैसे नारियल के ठोस गोले के भीतर उसकी गिरी सुरक्षित रहती है।

अनोखी-अजूबी बसावट :

मगरे-मगरियों के बीच इसकी बेतरतीब ऊंची-नीची, आड़ी-तिरछी बसावट के नाम ही बड़े अनोखे अजूबे हैं। पोल, सेरी, वाड़ा, ओल, टिम्बा, गली, घाट, टेकरी, वाड़ी, घाटी, दरवाजा, महल, बावड़ी, चौहट्टा, पुरी, खिड़की, चौक, पुरा, नाल, मंडी, मगरी, खुर्रा तथा कांटा जैसे संबोधनों से बस्तियों के नाम अपने आप में इतिहास, संस्कृति, धर्म, कर्म तथा घटना विशेष का बोध कराते हैं। बारह तो यहां पोलें ही थीं। पूर्वाभिमुख लिए सूरजपोल, पश्चिम दिशा में चांदपोल, हाथियों की निकासी के लिए हाथीपोल तथा सजाधारी को दंड देकर निष्कासित करने के लिए दंडपोल प्रसिद्ध रही।

हाथीपोल स्थित भूतमहल यति द्वारा उड़ाकर लाया गया। ऐसी ही यहां दैत्य मगरी है। प्राचीनकाल में यति ऐसी क्रियाएं कर अनेक मंदिर, वृक्ष, छतरियां, भवन और समाधिस्थल एक स्थान से उड़ाकर दूसरे स्थान ले गए। वर्तमान में भूतमहल तथा दैत्य मगरी के नाम से पूरी बस्तियां जानी जाती हैं। यहां का हिरणमगरी क्षेत्र किसी समय हिरणों का घोर जंगली क्षेत्र था। अब इस बस्ती क्षेत्र में न कोई हिरण और न कोई मगरी है।

नगर की स्थापना में भारतीय स्थापत्य शास्त्र के सिद्धांतों का पूरा ध्यान रखा गया। इसीलिए ऐसी विशेषताएं अन्यत्र कहीं नहीं मिलेंगी। मेवाड़ शासकों के आश्रय में यहां सबसे अधिक वास्तु-ग्रंथ लिखे गए।

वास्तुकारों ने 9 गुणा 9 रेखाएं डालकर 81 कोष्ठकों को कल्पित किया। चारों दिशाओं में देवताओं के तीर्थस्थल-आदिवासियों का कालाबाबा केसरियाजी, कैलाशपुरी के एकलिंगजी, नाथद्वारा के श्रीनाथजी, गड़बोर बिराजे चारभुजाजी और चित्तौड़ के सांवरियाजी इसके साक्षी हैं। यहां का जगदीश मंदिर तथा राजसमंद झील की पाल नौ चौकी के रूप में दर्शनीय है।

शिलालेख :

इसी पाल पर 25 बड़ी-बड़ी शिलाओं पर महाराणा राजसिंह से संबंधित संस्कृत में राजप्रशस्ति महाकाव्य उत्कीर्ण है। विश्व का यह सबसे बड़ा शिलालेख है। वास्तु के हिसाब से ही यहां विभिन्न समुदायों, कर्मकांडियों तथा जीवनोपयोगी विविध कारु-चारु शिल्पियों को बसाया गया।

महाराणा से जुड़े सौलह-बत्तीसा राव, उमराव, सरदार तथा राजपरिवार के पदाधिकारियों के लिए निराली हवेलियों का निर्माण किया गया। ऐसी लगैठगै दो सौ हवेलियां और उनकी अद्‌भुत ललाम चित्रकारी।

जलाशयों के साथ ही उदयपुर की पहचान यहां के उद्यानों, बावड़ियों तथा बाड़ियों के कारण भी बनी। सहेलियों की बाड़ी, सर्वऋतु विलास तथा गुलाबबाग पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से भी बड़े उपयोगी तथा महत्वपूर्ण हैं।

सहेलियों की बाड़ी प्राकृतिक फव्वारों के लिए जानी जाती है। सर्वऋतु विलास में छहों ऋतुओं का आनंद लिया जा सकता है। महाराणा सज्जनसिंह के बुलावे पर महर्षि दयानंद सरस्वती आये। जुलाई 1882 में सज्जन निवास उद्यान के नौलखा महल में उन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' ग्रंथ की रचना की। यही उद्यान गुलाबबाग के नाम से जाना जाता है।

इन्हीं महाराणा ने मानसून पेलेस के रूप में अतुलनीय 'सज्जनगढ़' का निर्माण कराया। अपने नाम पर सज्जन यंत्रालय छापाखाना स्थापित कर 'सज्जन कीर्ति सुधाकर' नामक पहला साप्ताहिक पत्र प्रारंभ किया।

गुलाबबाग में अनेक प्रकार के पेड़-पौधे जो भी राजदूत यहां आया वह अपने साथ लाया। आम, हरड़, गूंदा, इमली, गूलर, धोकड़ा, शमी, तमाल, ताल, शाल, हिंताल, काल, नारियल, खजूर, नीम, कदाम जामुन महुवा सुपारी, चंदन, तिलक जैसे सैंकड़ों तरह के पेड़-पौधे और वनस्पतियां यहां देखने को मिलती हैं। पेड़-पौधे जलात्मक और फलात्मक दोनों दृष्टियों से बेजोड़ हैं।

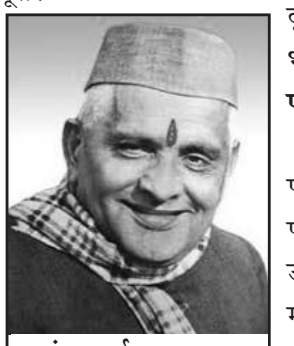

पं. जनार्दनराय नागर

भोज में मोतियों की परूसकारी :

महाराणा फतहसिंह द्वारा निर्मित फतहसागर के किनारे ऊंची पहाड़ी पर बने महल में महाराणा प्रताप के प्रधानमंत्री भामाशाह ने सरदारों-उमरावों को आमंत्रित किया। भोज के दौरान असली मोती का एक-एक दोना परोसा। इससे यह भ्रम टूटा कि महाराणा का खजाना खाली नहीं हुआ है।

कहते हैं मोती परोसने के कारण वह 'मोती महल' और उसका पूरा परिक्षेत्र 'मोती मगरी' के नाम से जाना गया। आज भी यहां उस काल के अवशेष हैं। यहीं मगरी पर प्रताप स्मारक के रूप में विशाल चेटक पर महाराणा प्रताप की भव्य प्रतिमा आसीन है।

देवीलाल सामर

पुरुषवेश में महिलाओं का योद्धोन्माद :

महाराणा प्रताप और अकबर के बीच जिस स्थल पर युद्ध हुआ उस रणक्षेत्र में पहलीबार महिला सैनिकों ने पुरुष वेश धारण कर अपना उत्सर्ग किया। उनमें से अधिकांश महिलाएं हल्दी-पीठी का शरीर लिए नव परिणिताएं थीं। इस कारण वह रणक्षेत्र 'हल्दीघाटी' नाम से जाना गया। यह स्थली खमनोर के पास है जहां के गुलाब ने राजा-रानियों तथा बादशाह बेगमों तक को अपनी सुगंध की उनींदी दी है।

यहां का 'हिन्दुस्तान जिंक' दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा जस्ता उत्पादक संयत्र है।

- शेष पृष्ठ सात पर

खोज-खबर

लखनऊ से एक बहिन की भेजी उदास राखी

लखनऊ की डॉ. विद्याबिन्दुसिंह न जाने कबसे प्रतिवर्ष ही राखी भेजती रही हैं। वर्ष 1986 में उन्होंने बड़े उदास मन से राखी भेजी। राखी के साथ वाले पत्र में लिखा- 'आपको यह जानकर बड़ी तकलीफ होगी कि मेरे बड़े भाई की लड़की जिसको अभी पिछले वर्ष ब्याह कर विदा किया गया, इस वर्ष गोली का शिकार हो गई और हमें छोड़ गई। उसकी ससुराल वालों का कहना है कि उसने आत्महत्या की है लेकिन आत्महत्या हो या हत्या, दोनों ही स्थितियों के लिये जिम्मेदार लोगों के प्रति मन में जो एक निरन्तर सुलगता आक्रोश है और उसके बिछोह का जो दुख है उसमें कुछ भी करने का या लिखने-पढ़ने का उत्साह लगभग समाप्त हो गया है।'

मैं इस पत्र और राखी को पाकर स्तब्ध अनमना सा खिन्न व्यथित हो गया। विद्याबिन्दुसिंह से कभी मिलना नहीं हुआ। कुछ भी पता नहीं कैसे यह स्नेह-सूत्र जुड़ गया। सोचता हूं, किसी पुरुष का भाई बनने के लिए और किसी महिला का बहिन बनने के लिए मिलना जरूरी भी नहीं है मगर भाई और बहिन के जो आत्मीय रिश्ते स्वत: ही सहज संभाव्य हो जाते हैं, वही मुझे रह-रहकर भारतीय संस्कृति का उदात्त इतिहास-गौरव और भारतीय जन-गण-मन का शाश्वत शील उत्कृष्ट हुआ लगता है।

डॉ. विद्याबिन्दुसिंह लोकसंस्कृति की श्रेष्ठ लेखिका और श्रेष्ठ कवयित्री हैं। उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान की ख्यातनाम उपनिदेशक के पद पर रहती हुईं उन्होंने इस संस्थान को जो साहित्यिक अवदान दिया उससे भारतीय साहित्य मण्डल कई रूपों में मानक बना। साहित्यकार का हथियार कलम की नोक होता है। विद्याबिन्दुसिंह ने मृत्यु पाई इन्दु के गम को अपनी दो कविताओं में कलमबद्ध किया। यह गम अकेली विद्याबिन्दु का गम नहीं है, उन सबका गम है जिनकी बहन-बेटियों को हत्या किंवा आत्महत्या का शिकार होना पड़ता है। मैं तो इसे समूचे राष्ट्र का गम मानता हूं।

'असुरक्षित बेटियों के नाम' लिखी गई उनकी कविता का स्वर राष्ट्र के नाम सवाल कर उठता है-

चारों ओर घिरे हुए
इस गहन अंधेरे में
टटोल रही हूं अपने ही प्रश्न
जो खो गए हैं, बिना उत्तर पाये ही
हिरनी सी आंखें
आतंक से फटती रहेंगी कब तक?
हल्दी चंदन के उबटन से संवारी गई देह
फफोलों से मरती रहेगी कब तक?
ससुराल की जिस देहली ने
मोर हिलाकर किया था स्वागत
वही चार कंधों पर लदी देह को
जाते देखती रहेगी कब तक?
फूलों सा मन वज्र जैसे तानों से
छिदता रहेगा कब तक?
रस्मों रिवाजों की वेदी पर
नित्य ही यह बलि चढ़ती रहेगी कब तक?

धरती से करता स्वागत इस कविता का अन्त है जिसमें पूछा गया है-

बताओ ओ धरती मेरे भारत की!
आकाश मेरे हिन्दुस्तान के!
दिशाओं मेरे आर्यावर्त की!
कहां है वह जगह
जहां भारत की बेटी
सुरक्षित रह सकती है?
जहां वह खुलकर
सांस ले सकती है?
जहां वह अपने ही घर में
निर्भय सो सकती है?

'इन्दु के नाम' लिखी एक दूसरी कविता में विद्याबिन्दु ने लिखा-

तुम्हारे जाने के बाद
लगता है
घर-परिवार मात्र शब्द हैं
उनके अर्थ कहीं खो गये
सम्बन्धों के प्रति
जुड़े विश्वास व्यर्थ हो गए

एक बहिन और क्या लिख सकती है अपने भाई को! विद्याबिन्दुसिंह की भेजी राखी मेरे हाथ पर नहीं चढ़ रही है। यह राखी तो मेरे लिए भी उतनी ही उदास बन गई है मगर यह हाथ कोरा भी तो नहीं रह सकता।

उसकी लिखी ये पंक्तियां बार-बार मेरी आंखों में तैर रही हैं- 'आपकी यह उदास बहन राखी भेज रही है कि भाई संकल्प लें कि बहनें अपने ही घर में सुरक्षित रहें और इसके लिये वे अपना संघर्ष जारी रखेंगे।' मेरे लिये ये ही पंक्तियां राखी बन गई हैं।

गवरी में प्रदर्शित कालू कीर

आदिवासी भीलों के आनुष्ठानिक खेल गवरी में कालू कीर का सांग बहुत प्रसिद्ध है। शोध के दौरान कई गवरी खेल देखने, पूछने के बावजूद कालू कीर के सम्बन्ध में प्रामाणिक तथ्य नहीं जान सका। यह खेल कीर जाति से सम्बन्धित है। इस जाति के लोग पानी किनारे तरबूज-खरबूज-सिंघाड़ा की खेती तथा मछली पकड़ने का व्यवसाय करते हैं।

गवरी खेल में कालू कीर की गाथा, जिसे भारत नाम से जाना जाता है, में कहा गया है कि मानसरोवर में देवी अम्बाव की अंगूठी गिर जाती है जिसे माछला निगल जाता है। फलस्वरूप उस माछले को मारकर अंगूठी प्राप्त करने का जिम्मा कालू नामक कीर को दिया जाता है। कालू तथा उसकी जोड़ायत किरण सूत्रधार जिसे कुटकड़िया कहते हैं, को इस कार्य के लिए अपनी असमर्थता जाहिर करते हैं। कारण बताते हैं कि हठिया राजा के राज में हमें भय लगता है। देवी यह सुन उन्हें वचन देती है कि हठिया से भय खाने की जरूरत नहीं है। कोई तुम्हारा बाल बांका नहीं करेगा। मैं सहायता के लिए हर समय तुम्हारें साथ रहूंगी। इस पर दोनों माछले को पकड़ उससे अंगूठी प्राप्त करते हैं।

सन्त साहित्य के मान्य विद्वान ब्रजेन्द्रकुमार सिंहल ने अपने गहन अध्ययन से श्रीमद् भागवत के हवाले से बताया कि कालू सतयुग का जीव है। यह पहुंचा हुआ सन्त था। स्वयं नारदजी ने इनसे दीक्षा ली। कालू की पैदाइश राजा वेन की जांघों के मर्दन से हुई। नाटे कद का होने से इसका नाम कालू पड़ा। भक्तमालकार कलियुग के सन्तों-भक्तों का अस्तित्व बारह सौ-तेरह सौ वर्षों का मानते हैं। कालू कीर भी माना हुआ सन्त-भक्त था। इसका काल गोरखनाथ, रामानुज, निम्बार्क जैसे सन्तों के करीब के आसपास का माना जाता है।

सिंहलजी ने बताया कि कालू कीर ने सन्त बनने के बाद जो कुछ लिखा वह जगन्नाथजी रै गुणगंजनामा तथा सबरंगी सरह चिंतामणी में उपलब्ध होता है। इन संग्रहों का संपादन काल विक्रम संवत् 1684 और इसके आसपास का है। कीर समाज के व्यक्ति कालू का जन्म भादवी बीज को मानते हैं। गवरी का खेल भी राखी, रक्षाबंधन के दूसरे दिन से प्रारंभ होकर चालीस दिन तक प्रदर्शित किया जाता है।

भक्तमाल की कथा का उल्लेख करते हुए सिंहलजी ने बताया कि बादसाही तलाव में कालू माछली पकड़ने उतरा कि बादशाह के लोगों को भनक लग गई और वे वहां पहुंच गये। उन्हें देख कालू बड़ा घबराया कि या तो उसे जेल में ठूंस देंगे या मौत के घाट उतार देंगे। इससे बचने के लिए उसने अपने शरीर पर तिलक छापा लगा, आंखें बन्द कर पानी में चुपचाप खड़ा हो गया। बादशाह के लोगों ने उसे देख जाना कि यह तो कोई पहुंचा हुआ तपस्वी दिखता है। उन्होंने तत्काल बादशाह को सारे हालात से विदित किया। इस पर बादशाह अपने लवाजमे के साथ आया और उसे मोहरें भेंट की।

इस घटना से कालू बच तो गया पर उसे मन ही मन पछतावा रहा। उसने महसूस किया कि उसकी आत्मा उसे धिक्कार रही है कि ऐसा ढोंग क्यों किया। इसी गहरे सोच ने उसे ईश भक्ति में मोड़ दिया। वह साधना में डूब गया। भक्त बन गया। एक साखी में यह उल्लेख द्रष्टव्य है-

बानौ बड़गोपाल कौ,
तिलक छाप गळ माळ।
काळू कहतो जम डरै,
भै मानैं भोपाल।।

गुणगंजनामा में संग्रहीत कालू की दो साखियां इस प्रकार हैं-

पर्वत से नाहिं कहै, नाहीं धरणि आकास।
काळू कोई जन कहै, जाके घट परकास।।
जो दुखदाई आपको, ताकौं इहिं विधि मार।
बहुत सजा काळू कहै, दिल से देई उतार।।

तन्तर-मन्तर वाले शोभा बा

बहुत समय से सुन रहा था कि ताणा के शोभालालजी जायसवाल तन्त्र-मन्त्र और टोटकों के बड़े जानकार हैं। वे कई तरह की दवाइयां भी जानते हैं। कई बीमार उनके पास पहुंचते रहते हैं। वे झाड़फूंक से भी और दवाइयों से भी इलाज करते हैं। उनसे मिलने का सोच लिए 07 मई 1987 को उनके घर चला गया।

76 वर्षीय शोभालालजी स्वस्थ-मस्त तबीयत के और जितना जो कुछ जानते, बिना लुकाए-छिपाए बताने वाले मिले। सुना तो यह था कि इस क्षेत्र के जानकार लोग किसी को कुछ कहने-बताने में बड़ी कोताई करते हैं। फरवरी माह में डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' ने आकोला में ही यह कार्यक्रम बना लिया था तदनुसार हम ताणा चले गये।

शोभाबा सांप काटे को झाड़े से ठीक करते हैं। बच्चों का फीया कालजा ठीक करते हैं। रगत्या का टोटका करते हैं। इसमें आठ मास के गर्भवास पर टोटका कर उसे बच्चा होने पर जच्चा की आंवल के साथ गाड़ दिया जाता है। नौ तरह का धान, सवा पाव शराब, कूकड़े का छोटा बच्चा आदि सामान जरूरी होता है।

सांप-गोइरा का एलम बड़ा जबरा होता है। उन्होंने बताया कि उनके साथ एक नारायणबा थे। दोनों मिलकर मन्त्र साधते। बांबी से दूर बैठते। दूध का कटोरा रखते। मिट्टी के नौ नाग रखते। एक सौ आठ मणियों वाली माला फेरते तो सांप बांबी से निकलता। वह पांच-छह बार जीभ से दूध चरपराता फिर बांबी में चला जाता। फिर ये नारियल फोड़ धूप देते और फटाफट उसकी चटक खाते। पुन: सांप बुलाते। कमर तक के पानी में बैठते। सुद की नाग पंचमी पर मन्त्र साधते। तब सर्प को बुलाते। वृक्ष को भी बांधते। जिसे सांप काट लेता उस साधक को आजीवन तुरई, भींडी, आल, सेव-मरमरी छोड़नी पड़ती। चौमासा में पगरखी नहीं पहनी जाती। रेड़ पड़ते समय भोजन छोड़ना पड़ता। गृहस्थी से कुछ दिन अलग ब्रह्मचर्य में रहना पड़ता।

जिसे सांप ने काटा उसकी लाश वृक्ष के बांध दी जाती। पास में गोबर-पीली लींपकर कुंभ कलश रखते। नीम के छोगे से एलम के साथ दंशज को झाड़ा जाता। वार्तालाप चलती। आपसी सवाल-जवाब होते। झाड़ागर कहता- रोगी को ठीक कर छोड़ दे। सांप बोलता- नहीं छोडूंगा। ऐसे कई बार सांप को मनाया जाता। आखिर में रोगी ठीक हो जाता। उन्होंने यह विद्या नत्थू बाबा कनपटे से और श्रीगरुजी ढाणीवालों से सीखी।

शोभाबा ने बताया कि भैरूनाथ की साधना में लोंग की धूप दी जाती। कटोरी पे शराब चढ़ाई जाती। त्रिशूल, लाल बिस्तर, लाल बगतरी तथा लाल लंगोट धारण करनी पड़ती। सवा लाख मन्त्र जपने होते। भैरू पुत्र देता। द्रव्य देता। सबकुछ देता। भैरू की गायत्री बोलते समय पेशाब करने पर भी स्नान करना पड़ता। लाल भोजन यानी गेहूं की बाटी में गुड़ और शुद्ध घी का जीमण करना पड़ता। भैरू के, सवा सेर से लेकर सवा पांच सेर तक गरगला यानी भुजिया चढ़ाये जाते।

मूठ के सम्बन्ध में उन्होंने बताया कि प्रतिदिन की मूठ है। पूरे बरस की 365 मूठ की साधना करनी पड़ती है। जिसको चाहो उसको ऊंचा-नीचा करो। डास डूस डच ये तीनों अक्षर याद हैं, आधा याद नहीं। कुण्डापंथ के सम्बन्ध में भी कई अचरज भरी बातें बताईं। उन्होंने बताया कि इनका सही उपयोग हो तो सभी चीजें अच्छी हैं अन्यथा तो घर फूंक तमाशा ही है। - **म. भा.**

शब्द रंजन
उदयपुर, बुधवार 01 मई 2019

सम्पादकीय

इस बार के चुनाव

इस बार के चुनाव आजादी के बाद हुए अब तक के चुनावों से भिन्न-अभिन्न लग रहे हैं। तब प्रमुख रूप में राजनीतिक दल थे। अब दल के प्रमुख नेता हैं जो अपने दल के सर्वेसर्वा तारणहार हैं।

तब चुनाव की विशेष हलचल, रौनक और उत्साह दिखाई देता था। अब वैसा माहौल नहीं रहा। तब सभाएं अलग ढंग से सजती थीं। रेकॉर्डें बजती थीं। पोस्टर पेम्फलेट लगाये जाते। दीवारों पर झंडियां लहराई जाती। फर्रियां चिपकाई जाती। तांगे से गली-गली घूम-घूमकर पर्चे बांटे जाते। नेताजी की विशेष पहचान थी।

भाषण सुनने के लिए लोग उमड़ पड़ते थे। लच्छेदार भाषण पर तालियों की गड़गड़ाहट होती और बेमजा होने पर हुर्राटे-धुर्राटे लगते। भागमभाग भी होती। चुनाव का रंग जहां जमता तो किरकिरी भी कम नहीं होती। आज जैसे दल बदलू नहीं होते। जन नेता को जन से किसी प्रकार का भय या खौफ नहीं रहता।

अब लगता ही नहीं कि चुनाव का सीजन चल रहा है। नेताजी को सुनने लोगों में वह उमड़ाव नहीं रहा। अब भीड़ को जुटाना पड़ता है। मोल लानी पड़ती है। भाई बाबा करना पड़ता है। लोग भी सयाने हो गए हैं। गिरगिट की तरह रंग देने लग गये हैं। वोट और नोट की गणित समझने में हुंसियारी बरतते हैं।

अब पार्टियों के प्रचारक सब ओर फैल रहे हैं। हवागाड़ी से एक दिन में अलग-अलग जगह की दूरियां नाप रहे हैं। अंट-संट वादे, अंट-संट घोषणाएं, अंट-संट बकवासों के बंदनवार बांधते अपनी अनेक मुद्राएं छोड़ जाते हैं।

एजेंसियां सर्वे करा रही हैं। सब काम ठेके पर चल रहे हैं। टीवी वाले मतदाताओं का रूझान जानने को तलाश रहे हैं। हार का अन्देशा खाने वाले छींया भर रहे हैं और बचपन में सुनी वह कहानी याद दिला रहे हैं जिसमें एक चूहा बड़ी मुश्किल से फून्दों वाली टोपी पहन रावजी के पास पहुंच पोमाता है- मेरे टोपी जैसी रावजी के नहीं। बार-बार बोरियत महसूस कर रावजी उसकी टोपी मंगवा लेते हैं तब चूहा चिल्लाने लगता है- रावजी मंगते हैं सो मेरी टोपी ले ली। रावजी यह सुन अपना अपमान महसूस कर उसे टोपी लौटा देते हैं। चूहा ठहरा चूहा सो मसखरी मारता कहता है- रावजी डर गये सो मेरी टोपी लौटा दी।

यूं ही चलती है जिन्दगी

मैं तब लिखता हूं जब मेरे अन्दर कुछ उबलता है। मैं क्या लिखता हूं और मेरे लेखन से फर्क क्या पड़ता है, यह मैं कई बार सोचता हूं लेकिन जैसे एक चूल्हे पर रखी हांडी में कुछ उबलता है और उसकी भाप से उस पर रखा बर्तन खड़खड़ाता है। यह भाप ही मेरे लिखने का कारण बनती है। बहुत सी हंडियां हैं। सभी ने जिन्दगी चूल्हे पर रखी है। हर लेखक, हर शायर जितने भी लोग हैं, हर आदमी जिन्दगी को होडी पर रखकर पकाता है लेकिन ये जिन्दगी न गलती है, न पकती है। बस, उबलती रहती है-उबलती रहती है। ये चूल्हा जला रहेगा और आप जिन्दगी उबालते रहेंगे। जिन्दगी यूं ही चलती है। -**गुलजार, दैनिक भास्कर, 27 अप्रेल 2019**

भाणावत का नाम एवरेस्ट वर्ल्ड रिकॉर्ड्स, नेपाल में दर्ज

उदयपुर। लेकसिटी के डाक टिकिट एवं करेंसी नोटों के संग्रहकर्ता विनय भाणावत का नाम एवरेस्ट वर्ल्ड रिकॉर्ड्स, काठमाण्डु (नेपाल) में दर्ज किया गया है। एवरेस्ट वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के संस्थापक मथुरा श्रेष्ठ ने बताया कि मेवाड़ फिलैटली सोसायटी के संस्थापक-अध्यक्ष विनय भाणावत ने नृत्य, वाद्य, वाद्य-यन्त्र, संगीतज्ञ एवं रंगकर्मी पर अलग-अलग देशों में जारी डाक टिकिटों का सर्वाधिक संग्रह कर विश्व कीर्तिमान स्थापित किया है। इस उपलब्धि हेतु काठमाण्डु (नेपाल) स्थित कार्यालय से प्रमाण-पत्र जारी किया गया है।

उक्त प्रमाण-पत्र यहां महाराज कुमार लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने भाणावत को प्रदान कर बधाई दी और कहा कि विनय भाणावत ने विश्व में मेवाड़ का मान बढ़ाया है।

इस अवसर पर भाणावत ने बताया कि उनके इस संग्रह का शुभा मुद्गल, डॉ. सोनल मानसिंह, मल्लिका साराभाई, बिरजू महाराज, मिस यूनिवर्स डायना हेडन, उस्ताद अमजद अली खान, बाबा रामदेव, राष्ट्रसन्त तरूण सागर, पूर्व प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी सहित देश की कई विभूतियों ने अवलोकन किया तथा मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की।

डॉ. जीनी गुप्ता विमिन प्रेनुएर अवॉर्ड से सम्मानित

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस), उमरड़ा की प्रसूति एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. जीनी गुप्ता को हेल्थ केयर सेक्टर में स्पेशल अचीवमेंट के लिए 'विमिन प्रेनुएर अवॉर्ड 2019' से सम्मानित किया गया।

डॉ. गुप्ता को यह अवॉर्ड मेंस्ट्रूअल हाइजीन, ब्रेस्ट कैंसर, सवाईकल कैंसर और स्त्रियों से जुड़ी हुई अन्य समस्याओं के निदान व जागरूकता के लिए सामाजिक स्तर पर अतुलनीय योगदान के लिए प्रदान किया गया।

दर्शन डेंटल कॉलेज में आयोजित इस समारोह की मुख्य अतिथि मिसेज वर्ल्ड मनप्रीत तनेजा थी। असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. जीनी गुप्ता पीआईएमएस के गायनिक विभाग में डॉ. अन्नपूर्णा माथुर एवं डॉ. पी. के. भटनागर के निर्देशन में कार्य कर रही हैं।

पगारिया केरियर गाइडेंस के अंतर्राष्ट्रीय चेयरमेन बने

जैन सोश्यल ग्रुप इंटरनेशनल फेडरेशन के अध्यक्ष कमल संचेती ने जैन सोश्यल ग्रुप अर्हम् के संस्थापक-अध्यक्ष आलोक पगारिया को केरियर गाइडेंस कमेटी का अंतर्राष्ट्रीय चेयरमेन नियुक्त किया है। विश्व के सबसे बड़े जैन संगठन जैन सोश्यल ग्रुप में श्री पगारिया की नियुक्ति आगामी दो वर्ष सत्र 2019-2021 के लिए की गई है। पूर्व में श्री पगारिया मेवाड़ रीजन में जोन कोर्डिनेटर के रूप में कार्यरत थे।

शपथग्रहण समारोह आयोजित

भारत विकास परिषद उदय शाखा की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी वर्ष 2019-21 का शपथग्रहण समारोह नजरबाग में आयोजित किया गया। अध्यक्ष बी. एल. खमेसरा, सचिव संतोषकुमार जैन तथा कोषाध्यक्ष डॉ. डी. के. गुप्ता को परिषद के राष्ट्रीय मंत्री डॉ. जयराज आचार्य द्वारा शपथ दिलाई गई। पूर्व शाखा अध्यक्ष डॉ. मेघेन्द्र शर्मा ने स्वागत उद्बोधन तथा पूर्व सचिव भूपेन्द्र व्यास ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। अन्य सदस्यों तथा प्रकल्प प्रभारियों को परिषद की प्रांतीय अध्यक्षा राजश्री गांधी एवं 10 नये सदस्यों को पूर्व राष्ट्रीय संरक्षक एस. के. वर्मा ने शपथ दिलाई। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. प्रकाश हिंगड़ थे। समारोह में रीजनल सेक्रेटरी श्रीमती संतोष गोधा, प्रांतीय पदाधिकारी संजीव भारद्वाज भी उपस्थित थे। संचालन डॉ. प्रभा रानी गुप्ता ने किया।

अंतर्राष्ट्रीय फोटो प्रतियोगिता में राजदीप को मिले दो गोल्ड मैडल

जोधाणा फोटो जर्नलिस्ट सोसायटी की ओर से आठवीं अन्तर्राष्ट्रीय फोटो प्रतियोगिता में राजस्थान पत्रिका, उदयपुर के वरिष्ठ छायाकार राकेश शर्मा 'राजदीप' के दो छायाचित्रों को गोल्ड मैडल मिला। संस्था अध्यक्ष रामजी व्यास ने बताया कि प्रतियोगिता में 25 देशों से 210 फोटोग्राफर्स ने छह कैटेगिरी में साढ़े तीन हजार से ज्यादा छायाचित्र भेजे।

गौरतलब है कि भारत सहित इंग्लैंड, अमरीका, फ्रांस, टर्की, चीन, फिनलैंड, हांगकांग, इटली, न्यूजीलैंड, आस्ट्रिया, सिंगापुर, जर्मनी जैसे अन्य कई देशों के नामचीन सैकड़ों फोटोग्राफर्स ने कलर ओपन, मोनोक्रोम, नेचर एंड वाइल्ड लाइफ, फोटो ट्रेवल, फोटो जर्नलिज्म और थीम बेस्ड कुल छह सेक्शन में हजारों प्रविष्टियां भेजीं। उनमें से इस वर्ष राजदीप ने मोनोक्रोम कैटेगिरी में एलएस टाक मेमोरियल गोल्ड मैडल सहित फोटो जर्नलिज्म में फैडरेशन ऑफ इंडियन फोटोग्राफी गोल्ड हासिल किया। इसके अलावा उनके कई चित्र प्रदर्शनी के लिए भी चुने गए।

सेलून सचिव मनीष व्यास ने बताया कि प्रतियोगिता में फियाप (फ्रांस) की ओर से 6, पीएसए (अमेरिका) से 6, एफ आईपी (इंडिया) से 6, जेपीएस से 30 तथा एल एस टाक मेमोरियल से 6 ; कुल 72 पदक दिए गए। सभी चयनित चित्रों की प्रदर्शनी 25 व 26 मई को सूचना केन्द्र, जोधपुर में लगाई जाएगी। निर्णायक मण्डल में इन्दौर से सुधीर सक्सेना, गाजियाबाद से आदित्य अग्रवाल, जोधपुर से शिवजी जोशी, ओमप्रकाश कल्ला व अमित व्यास थे।

रानी पद्मिनी का पीहर

- नंदकिशोर शर्मा -

चित्तौड़ की रानी पद्मिनी के पीहर को क्यों छुपाया गया? इतिहासकारों और अन्य लेखकों ने इस सम्बन्धी छानबीन करने की कोई आवश्यकता महसूस नहीं की। वंशावली रखने वालों से मिलने का भी किसी ने प्रयत्न नहीं किया। मेरी मान्यता है कि रानी पद्मिनी सिंघल की नहीं बल्कि सिंहल अर्थात् सिंध प्रदेश के किसी राजपूत की कन्या थी। इस प्रदेश की नारियों के रूप और लावण्य तथा सौंदर्य की प्रशंसा अनेक लोगों ने की है।

हरिसिंह भाटी ने पद्मिनी को जैसलमेर के रावल पुन्यपाल भाटी की पुत्री बताया है। कहा जाता है कि पुन्यपाल को 1275 ईस्वी में जैसलमेर से निर्वासित कर दिये जाने के कारण अपने परिवार सहित सिंध क्षेत्र के सिंहरार नामक परगने में रहना पड़ा। सिंहरार को रावल बाछुजी के तीसरे पुत्र सिंहराव ने आबाद किया। बाछुजी लोद्रवा का 121वां शासक था। इसके 24 गांव सईयदों को खैरात में दिये थे।

तवारिख जैसलमेर के अनुसार पुन्यपाल को राजसिंहासन से उतार कर अहमदाबाद से जैतसिंह को बुलाकर गद्दी पर बिठाया। पुन्यपाल एक वर्ष भी राज नहीं कर सका। क्रोधी स्वभाव के कारण सिंहड़ भाटियों ने उसे निर्वासित कर दिया। कहा तो यह जाता है कि तत्कालीन समाज द्वारा दुश्चरित्र राजा या किसी अपराधी व्यक्ति का सम्मान नहीं किया जाता था। इसी कारण पद्मिनी के पीहर का नाम, वंश आदि का परिचय छिपाये रखा किन्तु वह अतीव सौंदयमती थी इस कारण लोकगीतों में उसका उल्लेख होता रहा जो आज भी जीवन्त बना हुआ है। एक गीत में कहा गया-

परणी रे परणी गवरादे पांच ने पच्चीस
परण ले आयो रे पूगलगढ़ री पदमणी

सिंहरार क्षेत्र के सिंघल द्वीप में पद्मिनी का जन्म हुआ इसी कारण सिंहरार को सिंहल कहा गया। इतिहास में पुन्यपाल का परिचय नहीं आ पाया। उस काल में छोटे-बड़े राज्यों में काल-गणनाएं अलग-अलग थीं। भाटियों के भटीक संवत् और ख्यातों के संवतों में 100 से 122 वर्षों का अन्तर था। इसी कारण सिरोही के देवड़ों और जैसलमेर के भाटियों की इतिहास-कथाएं आगे-पीछे हो जाती हैं। देवड़ी रानी के पिता का नाम भी तवारिख में छुपाया गया। उसके ममेरे भाई गोरा-बादल तथा पद्मिनी के डोल से विवाह करने की कथा को भी छिपा दिया गया।

हमारे समाज में कहावत है कि बेटी आप कर्मी होती है, बाप कर्मी नहीं। पद्मिनी ने अपने वीरोचित कर्मों से परोक्ष रूप से ही सही अपने पीहर श्रीकृष्ण के वंशज यदु भाटियों के कुल गौरव को और अपनी आन-बान और शान पर मर-मिटने वाले चित्तौड़ के राणाओं के स्वाभिमान को उच्च शिखर पर पहुंचाया।

स्मृतियों के शिखर (74) : डॉ. महेन्द्र भानावत

कुंवारों के देश में विवाहित गरासिये

राजस्थान में आदिवासियों की इन-मीन साढ़ा तीन जातियां हैं। इनमें भील-मीणा सर्वाधिक चर्चित हैं। गरासिया सर्वाधिक रंगीन और शहरिया उपेक्षित ही हैं। राजस्थान के आदिवासी गरासियों का देश 'कुंवारों का देश' कहलाता है। आबू पर्वत के पूर्व में फैली पहाड़ियों में 24 गांव फैले हुए हैं। इन गांवों का यह क्षेत्र भाखर पट्टा कहलाता है। इस पट्टे का सबसे बड़ा गांव जाम्बुड़ी है। इसी गांव में गरासियों का सबसे बड़ा आदमी 'पटेल' रहता है। यह पटेल ही उनका राजा है। उसी का हुकम चलता है। फरमान चलता है। न्याय चलता है। सजा चलती है। सजा में पांवों में खोड़ाबेड़ी डालना, जेल देना तक शामिल है। कोठरियों के अवशेष तो आज भी देखे जा सकते हैं। पटेल परम्परागत पीढ़ी-दर-पीढ़ी बनता आ रहा है। वर्तमान पटेल लालजी हैं।

गरासियों के घर आबू रोड़, पिंडवाड़ा, बाली, कोटड़ा तथा गोगूंदा तहसील की पहाड़ियों में फैले हैं। इन पहाड़ियों का विस्तार गुजरात के बनासकांठा व साबरकांठा जिले तक है। उधर भी गरासियों की बस्ती है। आबू में गरासियों की उत्पत्ति हुई। इसके कई कथा-किस्से हैं। बीच में युद्ध की स्थिति ऐसी आई कि उन्हें अपना देश छोड़कर जाना पड़ा तब उन्होंने आन ली कि जब तक आबू वापस नहीं लेंगे, एक ही कान में मुरकी पहनेंगे। इस आन को उन्होंने पूरा निभाया। आबू वापस लिया तब ही दूसरे कान में मुरकी पहनी। पुन: अपने घर आने पर ये लोग घर आया- गराया कहे गये। गराया शब्द गरासिया की जगह आज भी प्रचलित है जिसके मूल में यही भाव-तथ्य लक्षित है।

सन् 1988-89 में गरासियों के अध्ययन के लिए मुख्यत: उनके निवास क्षेत्र आबू पर्वत के पूर्व में फैली पहाड़ियों में बसे चौबीस गांवों में से कुछ गांवों और उस क्षेत्र-पट्टे के सबसे बड़े गांव जाम्बुड़ी की यात्रा की गई। वहां उनकी जीवनशैली का अध्ययन-सर्वेक्षण किया गया। यही नहीं, इसके अलावा कभी उदयपुर के लोकानुरंजन मेले में तो कभी भीलवाड़ा के गैर समारोह में ; कभी जयपुर के सांस्कृतिक समारोह में ; कभी आबू की साहित्यकार संगोष्ठी में तो कभी सिरोही के आंचलिक समारोह में ; कभी कोटा के कलाकार समारोह में तो कभी बेणेश्वर, सियावा, घोटिया आम्बा के मेले में ; जहां-जहां भी गरासियों से मिलना हुआ, सदा ही कोई न कोई जानकारी हाथ लगती रही।

इस दौरान पाया गया कि उनका जीवन अजीब। उनकी मस्ती अजीब। उनके मेलेठेले अजीब। उनका घर-संसार अजीब। उनका प्रेमाचार अजीब। उनके रस्मरिवाज अजीब। सब कुछ अजीब निराला अनूठा है। हर मेले में गरासिया युवक-युवती अजीब ढंग से बनेठने खटकेदार सिणगार किये मिलेंगे। अपने को अलबेले छैले किये मिलेंगे।

युवती अपने सभी आभूषणों और सिणगारों में सजती-धजती-बजती-छनछनाती मिलेगी तो युवक अपने अल्हड़ ओज में चका-छका मदभरा बांका दिखाई देगा। युवतियां अपनी हेली-सहेली की बांह में बांह डाले डोलती-तोलती अपने को खोलती नखरे बांटती-बिखेरती मिलेगी तो युवक अपने यार-दोस्त के कंधे पर हाथ धरे अपनी लाठी के सहारे नाना उम्मीदों में खोये रंगारंग होते लगेंगे।

होली के बाद से गरासियों के मेलों की बाढ़ आ जाती है। त्रयोदशी को अम्बाजी के पास कोटेश्वर का मेला और अमावस्या को देलवाड़ा के पास कोटड़ा-कोसीना रोड़ पर चेतर विचितर मेला। इन मेलों का पौराणिक संदर्भ है। उनके कथा-किस्से कई तथ्य उजागर करते हैं। बैसाख कृष्णा पंचमी को सियावा गांव का गणगौर मेला उनका सबसे बड़ा मेला है। लगभग तीन सौ वर्षों से यह मेला लगता आ रहा है।

सुरपगला गांव के भूराराम गरासिया जो सरपंच भी हैं, ने बताया कि सियावा गांव में तीन फली है- माता का खेड़ा, जलैया फली और सियावा गांव फली। इन तीनों फली में बांसिया, डूंगाइचा तथा सिरीमिया बांसिया गोत्र के गरासिया रहते हैं। इनमें से प्रतिवर्ष एक-एक गोत्र के गणगौर लेते हैं।

चैत्र शुक्ला एकम को पांच युवक और पांच युवतियां गणगौर का व्रत लेती हैं। बीस दिन तक गौर माता का अखण्ड दीपक जलता रहता है और वे युवक-युवतियां प्रतिदिन अपने सिर पर गणगौर को लेकर नाचते-गाते रहते हैं। गौर के साथ ईसर भी होते हैं। बीस दिन तक गणगौर-ईसर छोटे रहते हैं। केवल लोठे में नीम-फल सहित डालियां या अन्य फूल लगा दिये जाते हैं।

अंतिम दिन ये साक्षात् स्वरूप धारण करते हैं, तब बांस की खपचियों के सहारे इन्हें आदम रूप दिया जाता है। दोनों के मुंह (मुंह-मुखौटे) काठ के बने होते हैं जो मुंह पर लगा दिये जाते हैं। फूल-पत्ती, खजूर के कच्चे फल-खजूरे, आम के पत्ते, महुवा फल आदि की मालाएं बनाकर गौर-ईसर को सजाते हैं और संध्या को विशेष जुलूस-उत्सव के साथ नाचते-गाते मेले में पहुंचते हैं। यहां गणगौर-ईसर का विवाह रचाया जाता है।

इस मेले में प्रत्येक गरासिया-गरासियन भाग लेना अपना पवित्र कर्त्तव्य समझते हैं। इनके झुंड के झुंड रात-रात भर गाते-नाचते चले आते हैं। तब मेले में प्रत्येक हंग को आटा दिया जाता जिससे ये रोटले बनाकर खाते। अब यह प्रथा नहीं रही। अकाल की मार ने उनके साथ जबर्दस्त चोट की। अब उतनी फसल भी नहीं होती है। भूराराम ने बताया कि तब एक किलो अनाज बाते तो एक कलसी पैदावार होती थी। एक कलसी का अर्थ दो क्विंटल के बराबर था। आज स्थिति ठीक उलटी है। अब एक कलसी बोते हैं तब जाकर एक किलो अनाज पैदा होता है।

मोर को ये आदर्श पक्षी मानते हैं। मोर के कई गीत हैं। एक गीत में मोर से सवाल-जवाब है। उससे पूछा जाता है- तुम्हारे मामा कौन? वह कहता है- बारह मेघ मेरे मामा हैं और तेरह बिजली मेरी मामियां हैं।

विवाह-शादियों में इन्हें बहुत खर्च करना पड़ता है। इतना खर्च ये कर नहीं सकते। इसलिए इनमें विवाह बहुत कम होते हैं पर परिवार सभी बसा लेते हैं। लड़का जब जवान हो जाता है तब वह अपनी हमउम्र लड़की की तलाश में रहता है। इस तलाश में लड़की भी रहती है। दोनों के परिवार भी इसमें पूरा सहयोग करते हैं। लड़की-लड़का अपनी ही जाति-बिरादरी का होता है। दोनों को कोई प्रसंग ढूंढकर मिला देते हैं। यों इनमें विवाह-पूर्व लड़की को किसी से मिलने की पूरी आजादी है। मिलने पर युवक-युवती एक-दूसरे को भेंट देते हैं। यह भेंट कांच, कांगसी, बिंदी, रूमाल जैसी रोजमर्रा की जरूरत की चीज होती है। जब दोनों का प्रेम पक्का हो जाता है तब वे किसी मेले में मिलने का तय कर वहां से भागने को मचल पड़ते हैं। सियावा के मेले में ऐसे युगल प्रेमी सर्वाधिक भागते सुने जाते हैं।

लड़की को उड़ाकर युवा गरासिया कहीं छिपता नहीं है। वह सीधा अपने पितृगृह पहुंचता है। माता-पिता सब समझ जाते हैं। इधर लड़की का पिता ढूंढ़ता, पता लगाता वहां आता है। गांव के पंचों को इकट्ठा करता है। पंचायत बैठती है। जब दोनों रजामंद हैं तो पंच भी अपनी सही लगा देते हैं परन्तु हर्जाने के रूप में लड़के के पिता को एक निश्चित रकम लड़की के पिता को देनी होती है, जो वे तय करते हैं।

अमूमन यह रकम चार हजार रूपया होती है। ऐसे अस्सी प्रतिशत गरासिये मिलेंगे जो इसी रूप में अपने जीवन साथी का वरण करते हैं। विवाह की रस्म कहीं होती भी है तो बहुत बाद में जब उनके संतानें हो जाती हैं। ऐसे मौके भी आते हैं जब पिता-पुत्र एक साथ शादी रचाते हैं। इसलिए इनमें कहा जाता है कि ये कुंवारे होते हुए भी विवाहित होते हैं।

आबू रोड़ के ओर गांव के गरासिया संस्कृति के अध्येता मगनलाल खंडेलवाल ने बताया कि गरासियों में महिला सर्वाधिक सुरक्षित है। एक-एक गरासिया दो-दो, तीन-तीन औरतें रखता है। उसके फैले हुए खेत होते हैं। भयंकर मुसीबत में भी वह खेत को कभी नहीं बेचता। अपनी औरतों को वह जुदा-जुदा खेत देकर उन्हें उनकी मालकिन बना देता है। अलग रहने के लिए उन्हें झोंपड़ी देता है। खेती-बाड़ी का सारा काम औरतें करती हैं जो पुरुषों से अधिक श्रमशील होती हैं।

यदि कोई औरत बीमार हो जाती है तो सबसे पहले इसकी सूचना उसके पीहर मां-बाप को भिजवानी होती है। उसके मां-बाप उससे मिलने आते हैं और इस बात की पूरी छानबीन करते हैं कि उसका इलाज ठीक से कराया जा रहा है या नहीं। सुसराल में उसे किसी प्रकार का कष्ट तो नहीं है।

यदि किसी स्त्री की मृत्यु हो जाती है तब भी उसके पीहर खबर भेजी जाती है और पीहर वालों के आने पर ही उसका अंतिम संस्कार किया जाता है। मृतक के सगे इस बात की पूरी जांच करते हैं कि उसकी मृत्यु प्राकृतिक हुई है या किसी षड़यंत्र की वजह से की गई है।

प्राकृतिक मृत्यु नहीं होने की स्थिति में बहुत बड़ा झगड़ा खड़ा हो जाता है। ऐसी स्थिति में लड़की के पीहर वाले तथा अन्य समधी तीर-तलवार-भाले आदि से सुसज्जित हो उन पर धावा बोल देते हैं। तब गांव वाले भी उन्हें बचाने नहीं आयेंगे। वे घर जला देंगे। मवेशी लूट घर का धन-माल ले जायेंगे और उस गांव के लिए भी खतरा पैदा कर देंगे। इस स्थिति की पूर्व आशंका से कभी-कभी लड़की के सुसराल वाले अपना घर छोड़ अन्यत्र भागते-छिपते भी सुने गए हैं।

कदाचित समझौते के लिए पंचायत भी बैठाई गई तो आक्रमणकारियों को बात-बात पर नेग देना पड़ेगा। जैसे हाथ से तीर नीचे रखवाई का नेग। कमरबंधा खुलवाई का नेग। जूते खुलाई का नेग। छाया में बैठने का नेग। ऐसे नेग-पर-नेग और उसके पैसे-पर-पैसे बढ़ते जायेंगे। यह राशि भी इतनी अधिक हो जायेगी कि उस परिवार के लिए बहुत भारी पड़ेगी। यह वैर यानी झगड़े की रकम कहलाती है। इसे आक्रमणकारी आपस में बांट लेते हैं। कभी-कभी वैर नहीं चुका पाने की स्थिति में उससे अंटस बंधी रहती है। ऐसी स्थिति में दो-दो, तीन-तीन पीढ़ियों तक यह वैर चलता हुआ अंत में सात-सात पीढ़ियों तक भी यह वैर चलता रहेगा मगर गरासिया हत्या का बदला ले करके ही दम लेगा। इस स्थिति में अब काफी परिवर्तन हुआ है।

लड़की को इस बात की पूरी आजादी है कि यदि वह अपने वर्तमान पति से संतुष्ट नहीं है तो उसे छोड़कर किसी दूसरे के साथ जा सकती है। ऐसी स्थिति में पंचायत बैठती है जो दावे के रूप में नव पति से दुगुनी राशि वसूल करती है। यह रकम लड़की के पिता तथा पूर्व पति को आधी-आधी दे दी जाती है। गरासिया कभी अकेला नहीं होगा। वह जहां भी जायेगा, स्त्री-पुरुष दोनों साथ-साथ नाचेंगे। कोई त्यौहार चाहे मेला-ठेला, हाट हो हंग-संग युवक-युवतियों और पुरुष-महिलाओं का झुंड साथ-साथ चलेगा।

खंडेलवालजी ने बताया कि आजकल कहीं-कहीं जातपांत के बंधन टूटते नजर आ रहे हैं। जो गरासिया भील महिला से शादी कर लेता है उसे जाति से बाहर कर दिया जाता है। फिर वह गरासिया नहीं कहला भील-गरासिया कहलाता है। यों भी गरासिया लोग अपने को भीलों से ऊंचा मानते हैं। भील-गरासिया को भील लोग अपनी जाति में सहर्ष अपना लेते हैं। इस तरह कोई भील किसी गरासिया के साथ रहने लग जाता है तो उसे भी गरासिया कहा जाता है। कहीं-कहीं गमेती-गरासिया भी कहते हैं।

इसमें कोई दो राय नहीं कि राजस्थान की आदिम जातियों में गरासिया जाति ही सर्वाधिक सम्पन्न जाति है। अकाल के भीषण से भीषण दुर्दिनों में भी यह जाति कभी घुटने नहीं टेकेगी और न कभी हार मानती हुई नजर आएगी।

बुढ़ापे में कष्ट पाना उन्हें बर्दास्त नहीं है। ऐसे बूढ़े जो बड़े कष्ट में जीते हैं, मौत को आमंत्रण देते हैं पर मौत बुलाने पर भी नहीं आती है। ऐसी स्थिति में उनके परिवार वाले मौत को बुलाने की मनौती लेते हैं। यह मनौती पहाड़ स्नान कराने के रूप में होती है। पहाड़ स्नान का अर्थ पहाड़ जलाने से है। मनौती पूरी करने की दशा में पहाड़ में आग लगा दी जाती है। इसे पहाड़ नहाना कहते हैं। जंगल की शुद्धि के लिए भी गरासिया इसे जरूरी समझते हैं। इसके बाद का वनांचल सर्वथा नये परिवेश में प्रस्फुटित हुआ लगता है।

यह विडम्बना ही कही जायेगी कि आदिवासियों के जो सामाजिक सरोकार हैं वे उनके समाज-परिवार के सुव्यवस्थित संचालन के उपयोगी हैं मगर हमने उनसे जाने-परखे बिना अपने ढंग से उनकी वयाख्या कर जो कानून बनाये वे न केवल उनके लिए बल्कि शासन के लिए भी मुसीबत ही बने।

- दृष्टव्य लेखक की कृति कुंवारे देश के आदिवासी

उदयपुर में वॉटर इकनॉमिक ज़ोन के पहले चरण का काम पूरा

उदयपुर। उदयपुर में इंटीग्रेटेड वाटरशेड डेवलपमेंट प्रोजेक्ट के तहत वॉटर इकनॉमिक ज़ोन के प्रथम चरण को पूरा कार्य डीएस (धर्मपाल सत्यपाल) ग्रुप द्वारा पूरा कर लिया गया है। इस प्रोजेक्ट का उद्देश्य जल संरक्षण और हार्वेस्टिंग को प्राथमिता देते हुए, क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन में सुधार करना था।

वॉटर इकनॉमिक जोन उदयपुर के कुराबड़ और असलीगढ़ के लगभग 10,000 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला है और इसका लक्ष्य मार्च 2021 तक 19 गांवों के 22,000 से अधिक लोगों तक अपनी पहुंच का विस्तार करना है। पहले चरण में इस प्रोजेक्ट को 2607 हेक्टेयर में लागू किया जा चुका है जो 1315 हेक्टेयर अलसीगढ़ और 1292 हेक्टेयर कुराबड़ में स्थित है। इसके अंतर्गत विविध वॉटर रिर्सोस डवलपमेंट स्ट्रक्चर जैसे 11 एनिकट या चैक डैम, 35 मिनी परकोलेशन टैंक्स या अर्दन डैम्स और साथ ही विभिन्न स्ट्रक्चर जैसे कंटिन्यूस कंटूर ट्रैन्चेस (18664 क्यूबिक मीटर), गैबिन, गली प्लग्स, रिचार्ज पिट्स आदि का निर्माण किया गया है। इसके अतिरिक्त 4 चैक डैम्स और 1 सामुदायिक तालाब का पुर्नद्धार भी किया गया है। इन निर्माणों में जल संग्रह और रिर्चाज की क्षमता लगभग 274507 क्यूबिक मीटर है।

जल संरक्षण, डीएस ग्रुप के सीएसआर का मुख्य आधार है और यह प्रयास जल की कमी वाले क्षेत्रों में जल सुरक्षा में सुधार को लेकर दृढ़ संकल्पित है। राजस्थान में जल संरक्षण परियोजनाओं की स्थापना, कृषि के लिए जल उपलब्धता बढ़ाने के लिए, क्षेत्रों की जल तालिका में सुधार करने के लिए की गई है और इससे समुदाय के जीविकोपार्जन संभावनाओं में भी वृद्धि होगी।

कंपनी ने सीकर, करौली, डूंगरपुर में वॉटर हार्वेस्टिंग स्ट्रक्चरर्स की स्थापना की। उदयपुर में विशेष स्ट्रक्चर जैसे अर्दन नाड़ी भी बनाई है। सीकर में 21 वॉटर कंजरवेशन स्ट्रक्चर्स का निर्माण किया है तथा 2 तालाबों का पुर्नद्धार किया है, जिससे 4,11,587 लीटर पानी का संचयन हो रहा है। यह प्रोजेक्ट नीम का थाना ब्लॉक की दीपावास और मोकलवास ग्राम पंचायत तथा हाथौरा श्रीमाधोपुर ब्लॉक की त्रिवेणी धाम पंचायत में स्थित है। वहीं करौली जिले में 13 पगाड़ा और 2 पोखर का निर्माण, बसोड़ा और अंगत का पुरा गांवों में किया गया है। इसके अलावा 9 अर्दन नाड़ी और 1 छोटे तटबंध वाले तालाब का निर्माण गोगुन्दा ब्लॉक में भी किया गया है। डूंगरपुर की सुराता ग्राम पंचायत में वॉटर हार्वेस्टिंग स्ट्रक्चर्स के निर्माण और मरम्मत का काम शुरू कर दिया गया है। जल संबंधी उपरोक्त कार्यक्रमों के अलावा, डीएस ग्रुप ने प्रोजेक्ट मंथन के अंतर्गत, सीकर और डूंगरपुर जिलों के 78 गांवों में किसानों को पशुपालन संबंधी सेवायें और पशुधन संबंधी परामर्श उपलब्ध कराया जा रहा है,

जिंक फुटबाल अकादमी ने जीता कप

उदयपुर। जिंक फुटबाल अकादमी टीम ने हिंदुस्तान जिंक कारपोरेट टीम को हराकर जिंक कप के पहले संस्करण का खिताब जीत लिया। उदयपुर के जावर में आयोजित इस टूर्नामेंट में

हिंदुस्तान जिंक से जुड़ी टीमों ने हिस्सा लिया। 13 साल के मिड फील्डर जांगमिंथांग हाओकिप इस टूर्नामेंट में सबसे अधिक चार गोल करने वाले खिलाड़ी रहे। इसमें एक हैट्रिक शामिल है। अमन खान और सुभाष दामोर ने दो-दो गोल किए।

हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड की चीफ पीपुल आफिसर सुश्री कविता सिंह ने कहा कि जिंक कप के लिए टीमों के दो पूल बनाए गए थे, जिनमें हिंदुस्तान जिंक की दो और अकादमी की एक टीम को रखा गया था। दोनों ग्रुप में अकादमी की टीमें टॉप पर रहीं। शुरुआत में कारपोरेट टीमों ने अच्छा खेल दिखाया लेकिन बाद में युवा फुटबालरों के आगे उनका जोश हल्का पड़ गया। जिंक फुटबाल के युवा खिलाड़ी अगले सप्ताह आयोजित होने वाली सीबीएसईडब्ल्यूएसओ स्टेट सुब्रतो मुखर्जी कप के लिए तैयारी कर रहे हैं।

एचडीएफसी बैंक के वित्तीय परिणाम घोषित

उदयपुर। एचडीएफसी बैंक लि. के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स ने 31 मार्च को समाप्त हुई तिमाही एवं साल के लिए बैंक के (भारतीय जीएएपी) परिणाम मुंबई में आयोजित मीटिंग में अनुमोदित किए। इन खातों का बैंक के कानूनी ऑडिटर्स द्वारा ऑडिट कराया जाना है।

31 मार्च, 2019 को समाप्त हुई तिमाही के लिए बैंक की कुल आय 31,204.5 करोड़ रु. थी, जो गत वर्ष की समान समाप्त तिमाही के मुकाबले 22.1 प्रतिशत बढ़ी। कुल राजस्व (कुल आय जमा अन्य आय) 20.7 प्रतिशत बढ़कर 17960.7 करोड़ रु. हो गई, जो पिछले साल की इसी तिमाही में 14,886.3 करोड़ रु. थी। 31 मार्च, 2019 को समाप्त हुई तिमाही के लिए कुल ब्याज आय (अर्जित ब्याज में से खर्च किया गया ब्याज हटाकर) 22.8 प्रतिशत बढ़कर 13,089.5 करोड़ हो गई, जो 31 मार्च, 2018 को समाप्त हुई तिमाही के लिए 10657.7 करोड़ रु. थी। यह तिमाही के लिए 19.8 प्रतिशत की औसत एस्सेट वृद्धि और 4.4 प्रतिशत के कुल ब्याज मार्जिन के चलते हुए।

4871.2 करोड़ रु. की अन्य आय (गैर ब्याज राजस्व) 31 मार्च, 2019 को समाप्त हुई तिमाही के लिए कुल राजस्व की 27.1 प्रतिशत थी और यह 31 मार्च, 2018 को समाप्त हुई तिमाही में 4228.6 करोड़ के मुकाबले 15.2 प्रतिशत बढ़ी। 31 मार्च, 2019 को समाप्त हुई तिमाही के लिए अन्य आय के चार तत्वों में 3,692.1 करोड़ रु. के शुल्क व कमीशन (पिछले साल की इसी तिमाही में 3329.7 करोड़ रु), 403.3 करोड़ रु. के विदेशी एक्सचेंज एवं डेरिवेटिव राजस्व (पिछले साल की इसी तिमाही के लिए 416.4 करोड़ रु.), 228.9 करोड़ रु. के निवेश के रिवैल्युएशन/बिक्री पर लाभ (पिछले साल की इसी तिमाही में 22.0 करोड़ रु. का नुकसान) एवं 546.9 करोड़ रु. की मिश्रित आय, जिसमें रिकवरी और डिवीडेंड शामिल है (पिछले साल की इसी तिमाही के लिए 504.5 करोड़ रु.)।

नौ माह की बच्ची का सफल ऑपरेशन

उदयपुर। पेसेफिक इन्स्टीट्युट ऑफ मेडिकल साइन्सेस (पीआईएमएस) उमरड़ा में चिकित्सकों ने नौ महीने की बच्ची का बिना चीरे के आँतों का सफल ऑपरेशन किया है।

पीआईएमएस के चैयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि भीलवाड़ा निवासी नौ महीने की एक बच्ची को अचानक पेट में दर्द, उल्टियां और लेट्रिन में खून आना शुरु होने पर परिजन उसे पीआईएमएस में लेकर आए। सोनोग्राफी में इन्टुससेप्शन नामक बीमारी (आंत में आंत फंस जाना) का पता चला। इस बीमारी का समय पर इलाज नही होने पर आंत फट भी सकती है, रोगी की मृत्यु तक हो सकती है। मरीज को तुरन्त पीडियाट्रिक सर्जन डॉ. प्रवीण झंवर, इन्टरनेशनल रेडियोलॉजिस्ट डॉ. राजाराम शर्मा, एनिस्थेटिस्ट डॉ. विनिता गोदा एवं डॉ. कृष्णा बॉलीवाल ने ऑपरेशन थियेटर में लेकर हाइड्रोरीडक्शन किया। इससे इन्टुससेप्शन रीलीज हो गया। इस मेजर ऑपरेशन को मात्र पांच मिनिट में पूरा कर लिया गया। उल्लेखनीय है कि चिकित्सकों की दक्षता एवं अत्याधुनिक सुविधाओं की वजह से यह ऑपरेशन पीआईएमएस में हो रहा है। पहले इसके लिए अहमदाबाद या जयपुर जाना पड़ता था या चीरा लगाकर बड़ा ऑपरेशन करना पड़ता था।

सुब्रतो कप में जिंक फुटबाल अकादमी की भागीदारी

उदयपुर। जिंक फुटबाल अकादमी ने झुंझनू में शुरू हो रहे प्रतिष्ठित सुब्रतो कप अंडर-17 टूर्नामेंट के क्वालीफायर्स के लिए अपनी पूरी ताकत झोंक दी है। जिंक फुटबाल अकादमी के मुख्य कोच सुरेश कटारिया ने कहा कि जिंक फुटबाल अकादमी की टीम जावर के डीएवी एचजेडएल स्कूल का प्रतिनिधित्व करेगी। अकादमी में शामिल सभी खिलाड़ी 15 साल से कम आयु के हैं और ये क्वालीफायर्स में टाप पोजीशन हासिल करना चाहते हैं। क्वालीफायर्स में राजस्थान के 13 स्कूलों की टीमों के बीच टक्कर होनी है और इन सबका लक्ष्य राष्ट्रीय स्तर पर राजस्थान का प्रतिनिधित्व करना है।

उन्होंने कहा कि भारतीय वायु सेना द्वारा आयोजित किया जाने वाला और भारतीय खेल मंत्रालय द्वारा समर्थित सुब्रतो कप फुटबाल टूर्नामेंट देश का सबसे प्रसिद्ध अखिल भारतीय इंटर स्कूल टूर्नामेंट है। डीएवी एचजेडएल स्कूल के खिलाड़ियों को जयपुर के कैम्ब्रिज हाई कोर्ट स्कूल, प्रिंस स्कूल (सीकर) और सीएच एमआरएम सीनियर सेकेंड्री पब्लिक स्कूल (श्री गंगानगर) के साथ ग्रुप-सी में रखा गया है। जिंक फुटबाल की 16 सदस्यीय टीम में आयुष कुश्वाहा, अन्शय गोयारी, संदीप मरांडी, मंदीपसिंह सोलंकी, अतुलकुमार मीना, जोकोनिया नारजारे, सुवीन स्वामी, अमन खान, मोहम्मद अदनान, सोनू, हिमांशु, अनुभवसिंह नेगी, राजेश्वर सिंह, मोहम्मद रिया, गौरव मीना और सुभाष दामोर को शामिल किया गया है।

जिंक्र ग्रेट प्लेस टू वर्क-सर्टिफाइड से सम्मानित

उदयपुर। वेदान्ता समूह की जस्ता-सीसा एवं चांदी उत्पादक कंपनी हिन्दुस्तान जिंक्र को 'ग्रेट प्लेस टू वर्क-सर्टिफाइड' से सम्मानित किया गया है। जिंक्र ने 'ग्रेट प्लेस टू वर्क' सर्वे में भाग लिया था जहां मानव संसाधन की कार्यविधियों एवं संस्कृति के ऑडिट के आधार पर जिंक्र को कार्य करने के लिए उत्तम पाया गया। इस मान्यता के लिए जिंक्र के तीन स्तम्भ-जिम्मेदारी से कार्य, बिल्डिंग स्ट्रॉग रिलेशनशिप तथा एडिंग एण्ड शेयरिंग वेल्यू समर्थित रहे हैं। कंपनी एक गतिशील एवं सम्पन्न कार्यस्थल बनाने के लिए प्रतिबद्ध है जहां क्षमताओं को महत्व, नेतृत्व विकसित तथा प्रदर्शन को पुरस्कृत किया जाता है। उल्लेखनीय है कि हिन्दुस्तान जिंक्र में संविदा कर्मचारियों सहित कुल 17 हजार कर्मचारी कार्यरत हैं।

टाटा हिताची शिनराय की पेशकश

उदयपुर। दक्षिण के बाजार, छत्तीसगढ़, झारखंड, विदर्भ, नागपुर, बिहार, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, वाराणसी फरीदाबाद और जोधपुर में सफलतापूर्वक पेश करने के बाद टाटा हिताची ने उदयपुर में नया बैकहो लोडर टाटा हिताची शिनराय पेश किया। शिन नाकाजीमा, निदेशक, सेल्स, मार्केटिंग और ग्राहक सेवा, टाटा हिताची ने कहा कि उदयपुर में शिनराय पेश कर हम बहुत गौरवान्वित हो रहे हैं। राजस्थान हमारे लिए महत्वपूर्ण बाजार है और हमें विश्वास है कि नए जमाने का यह बैकहो लोडर बहुत जल्द अपनी पहचान बना लेगा। उन्होंने कहा कि टाटा हिताची की नई पेशकश शिनराय सक्षमता और विश्वसनीयता के बुनियादी सिद्धांतों पर डिज़ाइन और तैयार की गई मशीन है।

हेमंत माथुर, एसिस्टेंट वाइस प्रेसिडेंट, सेल्स एवं मार्केटिंग ने बताया कि टाटा हिताची शिनराय हर जगह 'पहुंच' और खुदाई की ताकत में अपने उद्योग में सर्वश्रेष्ठ है। इसमें नई फ्रंट एण्ड लोडर ज्योमैट्री और अटैचमेंट के अनुकूल डिज़ाइन है। इसलिए यह सही मायनों में एक सक्षम मशीन है। इस सक्षमता को और दमदार बनाता है 'कम आरपीएम पर ज्यादा टॉर्क' वाला इंजन जिसके साथ इसके पूरे स्पेक्ट्रम में भरपूर रिजर्व पावर है।

हथेली पर उगते.....

(पृष्ठ दो का शेष)

इसके अलावा कॉपर, लेड, जिंक, सिल्वर, फास्फेट, एस्बेस्ट्स, कैल्साइट, लाइमस्टोन, सोपस्टोन, बैराइट्स, वोला स्टोनाइट और मार्बल जैसे खनिज यहां बहुतायत में होते हैं। पायरोटेक और सिक्योर मीटर्स जैसे विश्वस्तरीय प्रतिष्ठानों में हजारों लोग रोजगार पा रहे हैं।

पहला इतिहासवेत्ता कर्नल टॉड :

यहां कोलपोल में भारतेंदु हरिश्चंद्र आए। महाराणा भीमसिंह के समय यहां महाकवि पद्माकर गणगौर की प्रसिद्ध सवारी देख अति उल्लसित हुए और उत्साह भरे वातावरण में कवित्त रचना द्वारा- 'गौरन में कौनसी हमारी गणगौर है' लिख गौर और गौरी के सजे-धजे जुलूस को अवाक् निहारते ही रह गये। महाराणा कुंभा ने मेवाड़ी में 'गीत गोविंद' की टीका लिखी। इन्हीं महाराणा के कार्यकाल में पोलिटीकल एजेंट के रूप में कर्नल जेम्स टॉड द्वारा 'एनाल्स एण्ड एन्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान' नामक इतिहास ग्रंथ लिखा गया जो किसी विदेशी अंग्रेज इतिहासकार द्वारा लिखा गया पहला इतिहास कहा गया।

महाराणा प्रताप

लोककलाओं को पुनर्जीवन देता कलामंडल :

लोककलाओं के संरक्षण, उन्नयन, विकास तथा प्रचार-प्रसार के लिए लोककलाविज्ञ देवीलाल सामर ने भारतीय लोककला मंडल की स्थापना कर अपने लोककला दल द्वारा रंगीले राजस्थान के बहुरंगी लोकनृत्यों, नृत्य-नाटिकाओं तथा जनजातियों में रक्षित प्रदर्शनधर्मी संस्कृति की देश और विदेश में प्रस्तुति दी। घूमर, भवाई, तेराताल, गेर, घूमरा जैसे नृत्यों को विश्व ख्याति मिली। ज ग ह - ज ग ह लोककला संग्रहालय खुले। कावड़ तथा कठपुतली जैसी अनेक लोकशिल्पी कलाओं को पुनर्जीवन दिया। कठपुतली खेल ने सन् 1965 में रूमानिया के अंतर्राष्ट्रीय कठपुतली समारोह में 32 राष्ट्रों की प्रस्तुतियों के बीच कलामंडल के पुतली प्रदर्शन ने अपनी श्रेष्ठतम प्रस्तुति से विश्व का सर्वोच्च पुरस्कार प्राप्त किया।

महाराणा भूपालसिंह

यहीं से डॉ. महेन्द्र भानावत ने लोकधर्मी कला-संस्कृति-क्षेत्र का लेखन प्रारंभ कर सहस्त्राधिक आलेखों का प्रकाशन एवं शताधिक ग्रंथों का प्रणयन किया। कलानेत्री के रूप में यहीं शिक्षित-दीक्षित हुई डॉ. शकुंतला पंवार ने शाकुंतलम् नृत्य-संगीत संस्था की स्थापना कर देश के विभिन्न अंचलों में डेढ़ लाख से अधिक महिलाओं तथा बालिकाओं को लोकनृत्यों का प्रभावी प्रशिक्षण दिया। लोकगायक चंद्रगंधर्व ने प्रख्यात कंठ संतीतज्ञ ओंकारनाथ ठाकुर को आमंत्रित कर महाराणा कुंभा संगीत परिषद की स्थापना की।

लालटेन से विश्वविद्यालय का सफर :

पं. जनार्दनराय नागर ने पहलीबार आदिवासी क्षेत्र झाड़ोल में शिक्षा का लालटेन जलाया। उदयपुर में जगह-जगह समाचार पट्ट लगाये। समाचार-प्रेषण के लिए कोलपोल में जनपद की स्थापना की। श्रमजीवी युवकों के अध्ययन के लिए श्रमजीवी रात्रि कॉलेज चलाया। उनके निधन के पश्चात उनकी स्मृति में पं. जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय बना जिसके कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत हैं।

महात्मा गांधी से प्रेरित हो दयाशंकर श्रोत्रिय ने बालिकाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए महिला मंडल की स्थापना की। डॉ. मोहनसिंह मेहता ने विद्याभवन की स्थापना कर शिक्षा-सेवाओं का विस्तार किया फलस्वरूप राजस्थान का पहला बीएड कॉलेज यहां संचालित हुआ। प्रख्यात कवि-समालोचक नंद चतुर्वेदी इसी कॉलेज में अध्यापन के साथ-साथ साहित्यिक गतिविधियों के लिए ख्यात नाम हुए।

महाराणा भूपालसिंह का योग :

महाराणा भूपालसिंह ऐसे प्रथम शासक थे जिन्होंने सरदार वल्लभभाई पटेल को विशाल राजस्थान निर्माण के लिए अपना मेवाड़ राज्य छोड़ा। उन्हें महाराज प्रमुख की पदवी मिली। माणिक्यलाल वर्मा प्रधानमंत्री बनाये गए। आजादी के बाद मोहनलाल सुखाड़िया ने सत्रह वर्ष तक मुख्यमंत्री का पद संभाला।

बलवंतसिंह मेहता भारतीय संविधान निर्मात्री समिति के सदस्य बनाये गये। चित्रकार कुंदन ने महाराणा प्रताप का चित्र कल्पित किया जिसे महाराणा भूपालसिंह ने राजा रवि वर्मा की कलमकारी के स्पर्श से जगजाहिर किया।

आमजन की शिक्षा के लिए महाराणा ने भूपाल कॉलेज, भूपाल चिकित्सालय तथा भूपाल नोबल्स संस्थान प्रारंभ किया जो अब विश्वविद्यालय का स्वरूप लिए है। श्रेष्ठीजनों के लिए 'फील्ड क्लब' की स्थापना की। महेन्द्रसिंह मेवाड़ इसके स्थायी अध्यक्ष हैं। सचिव यशवंत आंचलिया ने बताया कि वर्तमान में इसकी सदस्य संख्या 3500 है।

आजादी के बाद महाराणा भूपालसिंह के उत्तराधिकारी भगवतसिंह मेवाड़ ने महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन की स्थापना कर शिक्षा-कला-संस्कृति-इतिहास आदि के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वालों को विविध पुरस्कार देना प्रारंभ किया। आज तो अरविंदसिंह मेवाड़ की अध्यक्षता में इन पुरस्कारों ने विश्वव्यापी श्रेष्ठतम पहचान बना ली है।

शैक्षणिक हब बनता शहर :

शहर के पारम्परिक बाजारों में चेतक सर्कल, बापू बाजार, अश्विनी बाजार, नेहरू बाज़ार, बड़ा बाज़ार, सूरजपोल चांदपोल, हाथीपोल, घंटाघर आदि मुख्य हैं। देखते-देखते यह शहर शिक्षा का हब बनता जा रहा है। दुर्गा नर्सरी रोड़, शक्तिनगर, सुखाड़िया सर्कल, हिरणमगरी क्षेत्र में कोचिंग सेंटर का विस्तार हुआ है। नौ तो यहां विश्वविद्यालय कार्यरत हैं जिनमें विदेश के भी कई छात्र अपना कैरियर बना रहे हैं।

मॉल संस्कृति के पथ पर भी यह शहर अग्रसर हो रहा है। सेलिब्रेशन मॉल, लेकसिटी मॉल, विशाल मेगा मार्ट, चेतक शॉपिंग मॉल, अरवाना शॉपिंग मॉल, सिटी सेंटर मॉल, मंगलम स्क्वायर, आर.के मॉल सहित कई मॉल शहर के नए शॉपिंग डेस्टिनेशन बने हैं।

फिल्मों के लिए इल्म :

उदयपुर हर फिल्म निर्माता का ड्रीम डेस्टिनेशन बनबना हुआ है। जेम्स बॉन्ड की 'ऑक्टोपसी' में लेक पैलेस और मानसून पैलेस को बेहतरीन ढंग से फिल्माया गया है। बर्तानी टेलीविजन श्रृंखला 'द ज्वेल इन द क्राउन' के कुछ दृश्य भी यहां फिल्माए गए। डिज़नी चैनल की फिल्म 'द चीता', 'गर्ल्स वन वर्ल्ड', 'दार्जिलिंग लिमिटेड', 'ओपनिंग नाइट', 'हीट एंड डस्ट', 'इंडिस्किन रिंग', 'इनसाइड ऑक्टोपसी', 'जेम्स बॉन्ड इन इंडिया', 'द बेस्ट एक्सोटिक मैरीगोल्ड होटल में शहर का रोमांचक सौंदर्य फिल्माया गया।

गाइड, मेरा साया, फूल बने अंगारे, कच्चे धागे, मेरा गांव मेरा देश, जलमहल, बगदाद के चोर की वापसी, एकलव्य, रॉयल गार्ड, धमाल, जिस देश मे गंगा रहता है, फिजा, हम हैं राही प्यार के, खुदा गवाह, कुंदन, नंदिनी, साजन का घर, ये जवानी है दीवानी, गोलियों की रासलीला, प्रेम रतन धन पायो और धड़क जैसी फिल्मों के कई सीन तो लोगों को अब भी जबानी याद हैं। राखी सावंत, राहुल

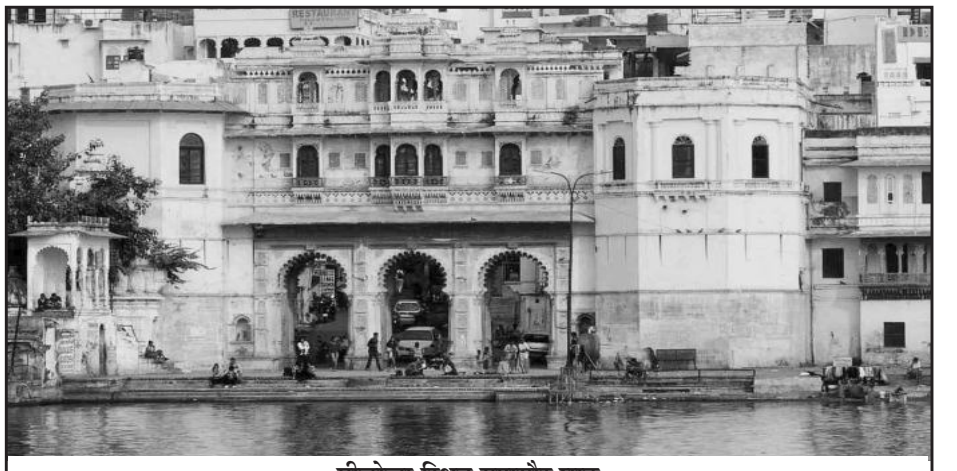
पीछोला स्थित गणगौर घाट

महाजन और मल्लिका शेरावत के स्वयंवर सीरियल भी यहां स्थायी यादगार छोड़ गए हैं।

खिलौने और खानपान :

किसी समय खांड-चीनी के बने खिलौनों में हाथी, घोड़ा, हिरन, पुतली, पक्षी, फूल, पौधे दीवाली पर लक्ष्मी पूजन के लिए बनाये जाते थे। विशिष्ट अवसरों पर भी हलवाई इसे बनाते थे। मेलों-ठेलों, ताजिये और गणगौर की सवार के आगे भी चलायमान खाट पर ये खिलौने मुख्यत: बच्चों में अधिक लोकप्रिय थे।

लड़कियों में होली के शृंगार के लिए गोबर के आभूषणों की माला बनाने का रिवाज पहले खूब था। मुख्यत: बोर, रखड़ी, आयल, पायल, सिंघाड़े, पान जैसे आभूषणों की मालाएं हर लड़की बनाती और होली माता को सिंगारती। खिरनी वृक्षों की अधिकता के कारण अनेक तरह के खिलौनों के लिए दूर-दूर तक उदयपुर की पहचान थी। अब यहां बचेखुचे ये वृक्ष तस्करों के हाथ पड़ कत्था बनाने में अधिक काम आने लगे हैं।

बरसात में फतहसागर पर पानी का उमड़-घुमड़

उदयपुर का स्वादिष्ट भोजन यहां की सर्वाधिक महत्वपूर्ण पैदावर मक्का से जुड़ा हुआ है। इससे जाजरिया, ढोकला, घेवरिया, पापड़ी बनाये जाते हैं। दूसरा महत्वपूर्ण दाल-बाटी-चूरमा है। मांसाहारी भोजन में लालमांस बड़ा लोकप्रिय है जिसका निर्यात भी किया जाता है। आजादी के बाद नटराज होटल की राजस्थानी-गुजराती थाली प्रसिद्ध है जहां बड़ी मान मनुहार और मेहमानबाजी से भोजन कराया जाता है। झकोलमा पूड़ी, चने की दाल और मीठा अमचूर कभी विशिष्ट अवसरों, ब्याह-शादियों का जानामाना स्वादिष्ट भोजन था। सब्जियों में बेसनगट्टे, पकौड़े, पतोड़ की सब्जी मुख्य रही।

डॉ. शकुंतला पंवार

चरम पर होटल उद्योग :

होटल एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष मनीष गलूंडिया ने बताया कि होटल उद्योग तो यहां का सर्वाधिक उन्नत उद्योग है। फाइव स्टार से लेकर गेस्ट हाऊस तक 500 के करीब ठहरने के आवास हैं। सारी नामचीन प्राचीन हवेलियां होटलों में बदल दी गई हैं। उदय विलास, लीला पैलेस, शिव निवास, लक्ष्मी विलास के अलावा पीछोला झील के मध्य द ताज लेक पैलेस पूरे विश्व में अपनी छवि लिये है। डेस्टिनेशन वेडिंग के रूप में इसका स्थापन भी इसके महत्व को प्रतिपादित करता है। धर्मशालाओं में चंपालाल धर्मशाला तथा हाथीपोल धर्मशाला का नाम सुविदित है।

दर्शनीय शिल्पग्राम :

फतहसागर झील सर्वाधिक आकर्षण लिए है। इसके चारों ओर रानी रोड़ का घुमावदार सौंदर्य सबको आकर्षित किये रहता है। इसके बीच में सोलर ओब्जर्वेटरी की एशियाव्यापी प्रभावना है। इसके पार्श्व में विभिन्न प्रांतों की झोंपड़ियों का मनोहारी दरसाव लिए पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के अन्तर्गत शिल्पग्राम सर्वाधिक दर्शनीय स्थल है जहां प्रतिदिन ही विभिन्न शिल्पियों तथा देशभर के कलाकारों द्वारा खासा मनोरंजन देखने को मिलता है।

पहले सड़कें चौड़ी, होटल सीमित, चौराहे तथा बाग-बगीचे अधिक घने तथा सौंदर्यपूरित थे। अब सारे चौराहे पर्यटकों को भ्रमित किये लगते हैं। जाम लगने की समस्या तो आम बनी हुई है। सड़कें संकड़ी, हर जगह अस्त-व्यस्त खड़े ठेले और गोमाताओं की बेधड़क रेलमपेल। कभी गधों, गंडकों और गडूरों की बहार थी।

झीलों की नगरी होते हुए भी यहां पानी की सप्लाई दुरस्त नहीं है और सीवरेजिंग मिक्स वाटर के कारण प्रदूषण का प्रभाव पेट संबंधी बीमारियों को बढ़ावा दिये है। अरावली की 100 से अधिक पहाड़ियां तथा जंगलों का सफाया होने से जंगली जानवरों की तादाद खत्म हो चुकी है।

विविश होता विकास :

वर्षों से जनता जनार्दन की जोरदार मांग पर हाईकोर्ट बैंच की स्थापना तथा फिल्मसिटी बनाने की चाह पर किसी की कान में जूं नहीं रेंगती। शहर को बी श्रेणी का दर्जा देने की मांग भी जोर पकड़ती थकती नहीं है। नवीनतम आकर्षणों में दूधतलाई पर रोप-वे तथा चीरवा स्थित फूलों की घाटी में जीप लाईन है। प्रताप गौरव केंद्र का विशाल परिक्षेत्र महाराणा प्रताप और दानवीर भामाशाह के जीवन दर्शन की लाइव प्रस्तुति लिए पर्यटकों को मोहपाश दे रहा है।

-द्रष्टव्य इंडिया टुडे, 13 मार्च 2019

कान्यो-मान्यो

अण कमाऊ उना भोजन

कान्या रे पड़ोस री दो लुगायां आपस में वातां करती गेला माथै कोई आध घंटो वेइग्यौ। कान्यो आपणे ऊपरली मंजल माथै खटकण स्यूं छानोमानो सुणर्‌यो हो। मन में वचार करर्‌यो हो के घर रा बाळक तो कंवारा फरै ने पड़ोस्यां रे फेरा देवा जाय जस्यो होदो वेइग्यो।

एक रे घरे दोजो है, गायां भुंकाड़ा मेल री है ने दूजी रे घर रा नाना बाल्क्या चा-दूध करता बाई-म्मा हेलो पाड़र्‌या है पण दोई करमेत्यां लागै नीठ-नीठ मोको देख्यो, आखा अग-जग रा बईड़ा खोल दीधा है।

कान्यो मन-ई-मन मुळकावतो मान्या पां पोंच्यो। मान्यो राब रा सटकड़ा लेतो बोल्यो, राब घणी आछी वणी है। यूं तो जदी भी वणै, आछी ही बणै पण कदीकदाक तो अतरी आछी बणै कै आंगल्यांई चटकर जावा रो मन करै। कान्यो बोल्यो के आज तो मजो आइग्यो, कान भड़े कर। लुगायां री वातां सुण नै धापग्यो।

बोल री ही के चार जग्यां वंडी जाण में असी ही जठै छोर्‌यां उमर यापता वेइगी पण हालतांई हाथ पीळा नी कीदा। वडारा तो केई आया पण आजकाल री भणी पढ़ी लड़क्यां कोई गा-हांडा नी है जो जंडे फांदो वंडे लार चली जावै। वी खुद भी चावै कै वांरो जीवणसाथी वांरै मुजब वै। पैली भी स्वयंवर वेताईज हा।

मान्यो बोल्यो, थूं ठीक कैवे। छोर्‌यां गेली नीं री। कोई बंगला वाळो चावै तो कोई आछो भण्यो-पड्‌यो कमाऊ पूत। कोई कार वाळो चावै तो कोई अस्यो जो देश छोड़ विदेशां मांय चाल सकै। कान्यो वचे मोर्‌यो मेल्यो, असी भी छोर्‌यां है जो परवार छोटो चावै। सास-ससुर वै तो ठीक नै नी वै तो घणो चोखो।

कान्यो बोल्यो, बात तो ठीक है, हींग लागै न फटकड़ी रंग चोखो आय पण हींग फटकड़ी नीं वै' तो बेरंग वेइजावै। यूं होचतां-होचतां उमर वधती रै नै छोर्‌यां घर मांय बैठी रै। कावत है कै घर-आंगणो कुंवारो आछो नी लागै।

मान्यो बोल्यो, थारी वात पुरानी पड़गी। आजकल तो घरै कई काम नीं वै। छोटा-छोटा फंक्शन भी बारै होटलां मांय, बाड्‌यां मांय करै। सगळा आजाद रैणा चावै। घर गंदो वै जावै तो साफ कस्यो भाईजी करै। रसोड़ो कुण संभाळै। हेंगदन भी लुगायां रसोड़ो पकड़नो नी चावै। अप्टूडेट रैवण स्यूं रंदोळा पाणी सब हवा वेइग्या।

कान्यो बोल्यो, थूं ठीक केवै। पण जी छोर्‌यां एक उमर पछै आछा वर नै आछा घर री वाट नाळै वांनै मनमाफक वर नीं मलै। वगत टल्यां पछै मलसी अण कमाऊ उनो भोजन। वी लुगायां कैयरी ही कै वांनै जी साब मिल्या वी अस्याईज मिल्या, जदी वी अण कमाऊ व्हैगा तो उनो भोजन कठै मिलसी। या कावत केई अरथां रो खुलासो करै। दूजी बोली, दारी वा कैवत सुणी कै नीं, चतर कागळो गु माथै बैठे।

रक्तदान शिविर में 79 यूनिट रक्त संग्रहण

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान द्वारा आरएनटी मेडीकल कॉलेज के सहयोग से रविवार को संस्थान के हिरण मगरी सेक्टर- 4 स्थित मानव मंदिर में रक्तदान शिविर आयोजित किया गया जिसमें रक्तदाताओं से 79 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया।

शिविर का उद्घाटन प्रात: 9 बजे संस्थान संस्थापक पद्मश्री कैलाश 'मानव', सह संस्थापिका कमला देवी, अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल, निदेशक वंदना अग्रवाल, आरएनटी मेडीकल कॉलेज ब्लड बैंक के डॉ. भागचंद रेगर ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। रक्तदान शिविर में युवाओं, वयस्कों के अतिरिक्त महिलाओं ने भी बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

इस अवसर पर कैलाश मानव ने कहा कि मौजूदा दौर में रक्तदान एक महती आवश्यकता है। रक्तदान सबसे उत्तम दान है। इससे कई जिंदगियां मौत की आगोश में जाने से बच जाती हैं। कमला देवी ने कहा कि मानवता की सेवा सबसे बड़ा धर्म है। खून की कमी से जूझ रहे अथवा दुर्घटनाओं में गंभीर रूप से घायलों की रक्तदान से जान बचाई जा सकती हैं। इसलिए रक्तदान को महादान कहा गया है।

वंदना अग्रवाल ने कहा कि युवा वर्ग रक्तदान के महत्व को ध्यान में रखते हुए रक्तदान शिविरों में अपनी अधिकाधिक भागीदारी सुनिश्चित कर रहा है। संस्थान हर तीन माह में रक्तदान शिविरों का आयोजन करेगा। शिविर प्रभारी डॉ. भागचंद रेगर ने कहा कि हम रक्तदान करके न केवल एक व्यक्ति की जिंदगी बचाते हैं बल्कि उसके समूचे परिवार को बचाते हैं।

शिविर में डॉ. संजय गांधी, डॉ. बी.सी रेगर, डॉ. प्रेरणा सिंह धाकड़, डॉ. रितेश आसोड़ा व नर्सिंग टीम ने रक्त संग्रहण किया। सभी रक्तदाताओं को सम्मानपत्र, प्रमाणपत्र तथा उपहार प्रदान किए गए। धन्यवाद की रस्म संस्थान के वरिष्ठ साधक दल्लाराम पटेल व रोहित तिवारी ने अदा की।

आज भी आदमी को अंतिम भरोसा न्यायालय पर : चीफ जस्टिस माथुर

- सिंघानिया लॉ कॉलेज में मूट कोर्ट का शुभारंभ -

उदयपुर। भारत में आम आदमी का अंतिम भरोसा भगवान से पहले न्यायालय पर है। यही न्यायालय व्यवस्था की सफलता है। बात, अगर बीते 70 सालों की है तो दुनिया में पब्लिक इंटरेस्ट के सर्वाधिक मामले हिंदुस्तान में ही निबटाए गए हैं, जो एक बड़ी उपलब्धि है। इसलिए, कहा जाता है कि जब तक समाज में न्याय के प्रति विश्वास है, तब तक समाज भी जिंदा है।

यह बात इलाहाबाद हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस गोविंद माथुर ने मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय से सबंद्ध सिंघानिया लॉ कॉलेज के नवनिर्मित मूट कोर्ट के शुभारंभ अवसर पर कही।

उन्होंने कहा कि कोई शैक्षणिक संस्था छोटी बड़ी नहीं होती है। सिंघानिया लॉ कॉलेज ने हाल ही में अपना जीवन शुरू किया है। विश्वास है कि यह कॉलेज आगामी समय में देश को कई काबिल वकील-जज देने में भूमिका निभाएगा।

चीफ जस्टिस गोविंद माथुर ने कहा कि राजस्थान में न्यायालयों की स्थितियां चिंताजनक है। उत्तरप्रदेश में सात सदस्यीय बैंच सिर्फ इसलिए गठित की गई है

ताकि यहां पर न्यायिक प्रशासन से जुड़े लोगों को किसी तरह की परेशानी नहीं हो। ऐसा राजस्थान में नहीं है।

विशिष्ट अतिथि उत्तराखंड विधि आयोग के चेयरमेन राजेश टंडन ने कहा कि इस पेशे में ऐसे लोगों का आना बहुत जरुरी है जो न्याय के नाम पर आम लोगों से ठगी करने वालों पर रोक लगाए।

राजस्थान हाईकोर्ट जोधपुर के न्यायाधिपति रामचंद्र झाला ने कहा कि मूट कोर्ट स्टूडेंट्स के लिए काफी लाभकारी होता है। यह पहला कॉलेज है जहां मूट कोर्ट का आयोजन प्रथम वर्ष से ही होगा। इस हिसाब से जब स्टूडेंट अपना पाठयक्रम पूरा कर लेगा तब तक उसे प्रेक्टिकल नॉलेज की भी पूरी जानकारी होगी।

समारोह में बार काउंसिल ऑफ इंडिया के सदस्य सुरेश श्रीमाली, बार काउंसिल ऑफ राजस्थान के सदस्य राव रतनसिंह, उदयपुर जिला व सत्र न्यायालय के कई न्यायाधीशों सहित करीब 200 जाने-माने वकील, विधिवेत्ता एवं विधि विद्यार्थी उपस्थित थे। व्याख्यानमाला से पहले हाईकोर्ट के न्यायाधिपतियों के कॉलेज परिसर में प्रवेश के साथ ही गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया तथा उसके बाद मूट कोर्ट का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर चीफ जस्टिस माथुर ने न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठक की।

व्याख्यानमाला के बाद सभी अतिथियों ने बाल विवाह रोकथाम अभियान पर पोस्टर का विमोचन किया। कॉलेज के प्रबंधन निदेशक डॉ. अशोक आचार्य ने बताया कि जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की तरफ से मिलने वाले अभियानों के साथ कॉलेज हमेशा से जुड़ा रहा है। पूर्व में मतदान जागरुकता, पानी बचाओ आदि अभियान में भी कई तरह की गतिविधियां की गई। इस बार बाल विवाह रोकथाम अभियान का बिड़ा उठाया है।

प्राचार्य डॉ. धर्मेश जैन ने बताया कि महाविद्यालय की गतिविधियां एवं विधि विद्यार्थियों का व्यावहारिक प्रशिक्षण न्यायालय द्वारा कराया जाएगा उसकी एवं एडीआर की न्यायाधीश रिद्धिमा शर्मा द्वारा सिंघानिया लॉ कॉलेज के प्रथम वर्ष के छात्रों की अपेंटिसशिप टीम की घोषणा की गई।

गिट्स के छात्रों का राष्ट्रीय स्तर पर 13वां स्थान

उदयपुर। गीतांजली इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नीकल स्टडीज, डबोक उदयपुर के विद्यार्थियों ने बैंगलोर की रेवा यूनिवर्सिटी में सम्पन्न हुए राष्ट्रीय सोलर व्हीकल चैलेंज में 13वां स्थान प्राप्त किया है।

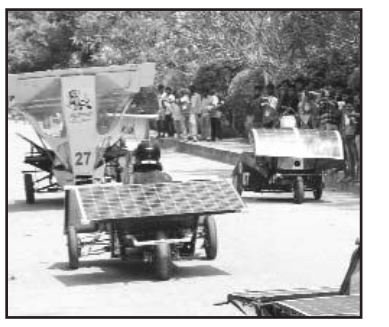

संस्थान के निदेशक डॉ. विकास मिश्र ने बताया कि यह एक तकनीकी प्रतियोगिता है जिसमें वाहनों का संचालन सौर ऊर्जा की सहायता से किया जाता हैं।

मैकेनिकल विभागाध्यक्ष डॉ. दीपक पालीवाल ने बताया कि प्रतियोगिता में चतुर्थ वर्ष के 16 और द्वितीय वर्ष के 8 छात्रों ने हिस्सा लिया और ब्रेक टेस्ट में राष्ट्रीय स्तर पर तृतीय स्थान, एक्सलरेशन में छठा, तथा एंडयोरेंस में नवाँ स्थान प्राप्त किया।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।